श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

गो० श्रीतुलसीदासजी-कृत

छप्पय रामायण

भाषा-टीका-सहित

टीकाकार—

डेहवामानपुर, ज़िला बाराबंकी-निवासी

श्रीबैजनाथजी कुर्मी

दूसरी बार



लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९२९ ई०



श्रीगणेशाय नमः ।

छप्पयरामायण सटीक ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयतेतराम् ।

दोहा—करि प्रणाम सियरामपद, करुणानिधि सुखधाम ।
ध्यान सकल कल्याण कर, भवनिधितारक नाम ॥ १ ॥
कृपासिंधु सब जगत हित, जनहित करुणा धारि ।
दया सु करि पाषाणते, शुद्ध किये ऋषि नारि ॥ २ ॥
कृपा लोक उद्धार हित, भये सु रघुकुलनाथ ।
करुणा कर सुग्रीव को, दुखहरि कृत कपिनाथ ॥ ३ ॥
कृपावारिधर गुरुचरण, करपुट करौं प्रणाम ।
अवधजन्मभू पास बसि, विदित फकीरेराम ॥ ४ ॥
रामवल्लभा जानकी, सदय क्षमागुणधाम ।
त्यहि युगपद वन्दन करौं, ज्यहि पावौं मनकाम ॥ ५ ॥

छन्द—नगवेदअंकशशि विक्रमाब्द प्रतिपद आश्विनसित भौमवार।
षटपदप्रदीपिका बैजनाथ गुरुकृपा पाइ बल चहत पार॥ ६॥

इस छप्पयरामायण में कृपा दया करुणा गुण दर्शाय सातों काण्ड की लीला सूक्ष्मरीति से वर्णन करते हैं। तहाँ कृपागुण को लक्षण यह है कि भूतमात्र रक्षा करिबे को हमहीं समर्थ हैं दूसरा कोऊ आता नहीं इति दृढ़ानुसन्धान राखना सोई कृपागुण है। ईश्वर-मात्र में पुनः आपनी सामर्थ्य आधीन शरणागत के पाप दुःख नाश करि सुखी राखना अरु सदा मित्र माने रहना यह रघुनाथजी में अनूप कृपागुण है। दोऊ प्रमाण भगवद्गुणदर्पणे—

"रक्षणे सर्वभूतानामहमेव परो विभुः।
इति सामर्थ्यसंधानकृपा सा पारमेश्वरी॥

यद्वा—स्वसामर्थ्यानुसन्धानाधीनाकालुष्यनाशनः।
हार्दो भावविशेषो यः कृपा सा जागदीश्वरी॥"

पुनः दया गुण को लक्षण यह है कि जीवन को दुःखी देखि बे प्रयोजन वाको दुःख मिटावना यही धर्म को एक पद दया है। यथा भगवद्गुणदर्पणे—"धर्मपर्यंकस्य चतुर्थपादत्वेन परिगणितायाः। धर्मात्मनां सर्वत्राभ्यर्हितायाः दयाया यूयमुपस्थितत्वात् प्रथमं निर्वचनमुचितम्।

तथाहि—सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥
इत्युक्तलक्षणा प्राणिदुःखध्वंसनभावना दया।
दया दयावतां ज्ञेया स्वार्थस्तत्र न कारणम्॥"

पुनः करुणागुणलक्षण—

दोहा—सेवक दुखते दुखित ह्वै, स्वामि विकल ह्वै जाय।
दुख हरि सुख साजै तुरत, करुणागुण सो आय॥

पुनः भगवद्गुणदर्पणे—

"आश्रितार्त्यग्निना हेम्नो रक्षितुं हृदयद्रवः।
अत्यन्तमृदुचित्तत्वमश्रुपातादिकृद्द्रवत्॥
कथं कुर्यात्कदा कुर्यान्माश्रितार्तनिवारणम्।
इतीच्छयादुःखदुःखित्वमार्त्तानां रक्षणत्वरा॥
परदुःखानुसन्धानाद्विह्वलीभवनं विभोः।
कारुण्यात्मगुणस्त्वेष आर्त्तानां भीतिवारकः॥"

इत्यादि गुण रामचरित वर्णन में उद्दीपन करि तब आपने शोक संताप नाश करिबे को प्रार्थना करते हैं।

इति भूमिका समाप्तम्।

श्रीगुरुचरणसरोज बन्दि गणनाथ मनावौं।
जयहि प्रसाद शुभ होइ नाम सो विनय सुनावौं॥१॥
आरतभंजन राम नाम मुनि साधुन गाईं।
सुमिरत गाढ़े नाथ होहिं सब ठावँ सहाई॥२॥
श्रीपति रघुपति अवधपति करो नाम सोइ जापना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक सन्तापना॥३॥१॥

यामें गुरुइष्ट वंदनात्मक मंगलाचरण है यथा श्रीगुरुचरण सरोज वंदि अर्थात् श्री कहे ऐश्वर्य शोभा प्रताप समर्थ सहित जो गुरुदेव हैं तिनके पद कमलन को प्रथम वंदना करि शीश नवाइ पुनः गणनाथ मनावौं मंगलकरता जानि गणेशजी को सुमिरण करत हौं।

पुनः ज्यहि के प्रसाद ते सदा शुभ होइ अर्थात् जाको सुमिरण करि गणेशौजी शुभकरता भये अरु सबको शुभकरता हैं ऐसा जो राम नाम तासों विनय सुनावत हौं मोपर कृपा करो १ कैसा रामनाम है आरतभंजन आरत दुःख ताको भंजन नाशकरता अर्थात् संकट परे जो पर रामनाम लै पुकारत ताको दुःख तुरतही प्रभु नाश करि देत यही बात मुनि साधुजनन गाई है कैसा गावते हैं कि गाढ़े परे पर सुमिरतसंते नाथ सब ठांव सहाइ होहिं अर्थात् शत्रु संकटादि गाढ़ दुःख परे पर जो जन रामनाम सुमिरण करता है ताको सब ठौर रघुनाथजी सहाय करते हैं वाको दुःख मिटाय देते हैं २ ऐसे श्रीपति अर्थात् ब्रह्माण्ड में यावत् ऐश्वर्य हैं सो जिनके दिहे ते भये हैं इति ऐश्वर्य के पति परब्रह्म सोई रघुपति अवधपति अर्थात् रघुवंशकुल में अवतीर्ण ह्वै अयोध्या के महाराज भये सुलभजीवन को उद्धार कीन्हे सोई कृपासिंधु स्वामी को नाम मैं सदा जाप करता हौं हे रामचन्द्र अमल सुयश भुवन में प्रकाशकरता कृपा करिय मम शोकसंतापना हरहु अर्थात् व्याधि शूल दण्ड हानि वियोग दरिद्रता वा काम क्रोध लोभ इत्यादि जो संपूर्ण प्रकार की तापैं हैं तिन करिकै शोक नाम दुःख है ताते आपु की शरण हौं हे महाराज रामचन्द्र दयारूप अमृतमय करुणारूप शीतलता युत कृपारूप किरणन करिकै शोक संतापना को हरि लेहु ॥ ३ । १ ॥

रही कपोत शिशुपति समेत बैठी तरुवासा ।
गगन उड़ात शचान भूमि द्व लगत प्रकासा ॥१॥
व्याध गहे कर बाण देखि लोचन जल मोचति ।
पक्षी सोपि सभीत देखि दंपति उर शोचति ॥२॥

दुष्ट दवन करुणायतन राखि लेहु शरणापना।
कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।२॥

कौन भांति शोकसंताप हरहु यथा कपोत कबूतरी सो शिशु बच्चा तथा पति कबूतर सहित तरु वृक्ष पर वासस्थान पर बैठी रही ता समय वाको ऐसा संकट परा कि गगन आकाश में तौ श्वान बाज उड़ात अर्थात् उड़ै तो बाज पकरिलेवै पुनः भूमि में दवलागि दावानल लागी सो प्रकाश नाम फैलत जाती अर्थात् जो नीचे उतरै तौ अग्नि में जरिजाइ १ पुनः व्याध गहे कर बाण अर्थात् किसी ओरते व्याधा हाथे में धनुष गहि तामें जोरि बाण साधि खैंचे ताको देखि कबूतरी लोचन जल मोचति अर्थात् संकट ते नेत्रनते आंशु जल डारने लगी पुनः पक्षी कबूतर भी सब बात देखि सो अपि सोऽपि सभीत अर्थात् कबूतर सोऊ अपि नाम निश्चय करिकै सभीत नाम सडर भयो इति दंपति स्त्री पुरुष दोऊ उर शोचति हृदय में बड़ा शोच पूर्वक विचार करत भाव या समय हमारे प्राण किसी भांति नहीं बचि सक्ते हैं अब रक्षक एक परमेश्वरै है यह विचारि शरण ह्वै पुकार कीन्हे २ क्या पुकार कीन्हे कि हे करुणायतन करुणागुणभरे मंदिर अर्थात् शरणागत को दुःखित नहीं देखि सक्ते हौ वाके दुःखते आपहू दुःखित ह्वै शीघ्रही दुःख हरि वाको सुखी करिदेते हौ इति करुणायतन पुनः दुष्टदवन अर्थात् जे अधर्म अनीति ते निर्हेतु अन्य जीवन को दुःख देनेवाले ऐसे दुष्टन को दवन नाशकरता प्रभु राखिलेहु शरणापना अर्थात् दुष्टन के घेरा में परा महूं संकटवश पुकारता हौं आपना शरणागत जानि मोको भी राखिलेहु भाव दुष्टनते प्राण बचावहु हे रामचंद्र अमल यश भुवन में प्रकाशकरता दयारूप अमृत करुणारूप शीतलता सहित कृपारूप किरणन करिकै मेरी संपूर्ण ताप शोक को हरहु॥३।२॥

उठे तत्क्षण मेघ बृष्टिजल अनल बुताने।
निसरि भुवंगम डसेउ बुद्धि व्याधा बिकलाने ॥१॥
करते छूटेउ तीर जाइ शाचानहि मारी।
अस्तुति करत कपोत नाथ प्रणतारतिहारी ॥ २ ॥
सो प्रभु वेगि दयाल होहु भ्वहिं जिमि कपोत अरिदापना।
कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥३।३॥

उन पक्षिन की पुकार सुनतही प्रभु सहाय कीन्हें कौन भांति प्रभु की इच्छा ते तत्क्षण ताही क्षण आकाश में सघन मेघ उठे तिनकी समूह जलवृष्टि भई त्यहि के परे दावानल बुताइ गयो तथा बांबीते निसरि भुवंग डसेउ अर्थात् जहां वधिक खड़ा रहै तहँ सर्प की बांबी रहै तामें जब जल भरि भया तब अकुलाइकै सर्प निसरा व्याधा को देखि जाना कि इसीने मेरी बांबी में जल डारा है इसी क्रोधते काटिखाया ताके विष के वेगते व्याधा की बुद्धि विकल ह्वैगई देह में चैतन्यता न रही १ बुद्धि विकलता में करते तीर छूटेउ सो जाय शचानहि मारी अर्थात् धनुष में जोरे बाण ऊपर को साधे खैंचे रहै जब विषवेगते मूर्च्छित ह्वै गिरने लगो तब तीर छूट सो जाइ बाज के लगो इधर व्याधा मरा उधर बाज मरा अग्नि प्रथमही बुझानी इत्यादि जब सब बाधा निवारण भई तब कपोत कबूतर प्रभु की स्तुति करने लगा हे नाथ प्रणत जो नम्रतापूर्वक प्रणाम करनेवाला ताकी आरति दुःख के हारी हरिलेने वाले आपु निश्चय करिकै सांचे हौ इत्यादि जो कपोत की सहाय भया ताहीसों मेरी प्रार्थना है २ क्या प्रार्थना है जिमि कपोतअरिदापन यथा कबूतर के शत्रु बाज व्याधा आगि तिनके दाप अभिमान को नहीं राखेउ दीन ह्वै पक्षी के

पुकारतही सबको नाश करिदिहेउ सोई प्रभु मोपर वेगि दयाल होहु दयाकरि मेरा भी संकट हरौ अर्थात् विचार शिशु सुमति स्त्री सहित मैं संसाररूप विटपपर सुथल वासस्थानपर बैठा हौं तहां देहरूप भूमि में दैहिक दैविक भौतिकादि तापैं तीनि दिशिते दावानल से लगी हैं पुनः शीश पर काल बाज सरीखे उड़िरहा है नीचे कलि-काल व्याधा सरीखे कामादि बाण खैंचे है सो मैं किसी भाँति बचि नहीं सक्ता हौं ताते आरत है पुकारता हौं जा भाँति कपोत पर दया करि दुःख हरि सुखी कीन्हेउ तैसेही निर्हेतु दयाकरि मेरे भी सहायक होहु हे श्रीरामचन्द्र अर्थात् कलंकरहित पूर्णचंद्र सम अमल धवल सुयश भुवन में प्रकाश करता कृपाकरिये मम शोकसंतापना हरहु अर्थात् दयारूप अमृतमय करुणारूप शीलता सहित कृपारूप किरणन करिकै संपूर्ण प्रकार की तापैं तथा कालकलिकृत कामादिक शोक दुःख इत्यादि हरि लेहु सुखपूर्वक शरण में राखौ ॥ ३।३ ॥

मीन कमठ वाराह नमो नरहरि अरु बावन।
परशुराम श्रीराम कृष्ण जनहित खलदावन ॥ १ ॥
बोधरूप कल्की नमामि दशविध वपु धारण।
अमित रूप अगणित चरित्र कृत नाम उधारण ॥२॥
सुर रंजन सेवकसुखद सीयनाथ करि जापना।
कृपा करिय श्रीरामचंद्र मम हरहु शोकसंतापना ॥३।४॥

यामें भक्त वात्सल्यता में विभवरूप अर्थात् दशौ अवतार वर्णन करत तामें सतयुग में मीन कमठ वाराह नरहरि इति चारि अव-तारन को कहि नमस्कार करते हैं किस हेतु कौन अवतार भया यथा सिद्धांततत्त्वदीपिकायाम्—

चौ०-पद्मोत्तरखंड जु है कथा। विष्णुधर्मोत्तर है कछु यथा ॥
हिरण्याक्ष पृथ्वी लै गयो। मध्यमहार्णव मग्न सु भयो ॥
तब प्रभु शूकररूपहि धारि। दंष्ट्रा करि डाख्यो सु बिदारि ॥
मारि असुर पृथ्वी लै आयो। सकल यज्ञमय देह सुहायो ॥
शुक्लदर्श रवि संगव काल। प्रकटे यज्ञवराह कृपाल ॥
आदिहि ब्रह्म जु कल्प उदार। ये तामहिं प्रकटे द्वै बार ॥
स्वायंभुव मन्वन्तर जहां। भये विरंचि घ्राणते तहां ॥
चाक्षुषीय मन्वन्तर पाय। नीरमध्य प्रकटे हरि आय ॥
कबहुँ सु चतुःपाद ये श्याम। नर वराह श्वेत सु अभिराम ॥
पुनि अवतारमत्स्य प्रभु लीनो। श्रुति मन्वादिक रक्षण कीनो ॥
तेऊ जगतहित करन कृपाल। भये वराह ज्यों वह्नैकाल ॥
स्वायंभू मन्वन्तर माहीं। सोमक दैत्य जाइ विधिपाहीं ॥
हरि वेदनि किय जलधि प्रवेश। विधि विनयो प्रभु पाय कलेश ॥
ह्वै हरि मत्स्य दैत्य तेहि मारि। आनि दियो विधिको श्रुति चारि॥
कार्त्तिक एकातिथि गुरुबार। प्रकटे सांझ मत्स्य अवतार ॥
पुनि चाक्षुषिक मन्वन्तर अंत। जगत प्रलयदुख भयो दुरंत ॥
भूतल स्वतल लोपि जल बढ़े। सुर डरि महर्लोक पर चढ़े ॥
तहँ जु रहे सु विनशि सब बहे। सकल कुलाचल जल महि रहे ॥
भावी मन्वादिक भय भरे। तब प्रभु मत्स्यरूप अवतरे ॥
प्रभु नौका सम कीन्हीं मही। सकल बीज लीन्हें वह रही ॥
भविष्य मनुज ऋषि तहां चढ़ाय। ताकहुँ हिमगिरिशिखर लगाय॥
तहँ दृढ़ बांधि अदृश्य भये हरि। कृतसम समय सु तहां रही तरि॥
पूरुबवत उपशम जल भये। पुनि मनु ऋषिन सबहि करिलये॥
श्रीनरहरि अवतार सु सुनौ। जस गावहुँ पुनि हिय में गुनौ ॥
लगि मुनि शाप पारषद परे। आदि असुर अवनी अवतरे ॥

ह्वै बराह हिरण्याक्ष सुमार्‍यो। हिरण्यकशिपु हिय बैर सँभार्‍यो॥
ताके सुत प्रहलादव भयो। तिहि हरिधर्म हिये धरिलयो॥
अपने कर मारन जब धायो। ह्वै नरहरि धरहरि हरि आयो॥
कनककशिपु उर नखनि बिदार्‍यो। जन देवनहित असुर सुमार्‍यो॥

पुनः कच्छपअवतार। यथा—

मुनिशाप सु शक्रहि जब भयो। आपदग्रसित जगत ह्वै गयो॥
क्षुधादुखनि सुरहूं अकुलये। ऋषिनसहित मिलि विधिपहँ गये॥
शिव विरंचि आगे करि सबै। गये क्षीरनिधि तीर सु तबै॥
तब हरि अपनो रूप दिखाये। बोले बचन सबनि सुखदाये॥
दुर्वासा ऋषि शाप जु दीन्हें। लक्ष्मी गमन सिंधु में कीन्हें॥
बहव जलधिते प्रगटै जबै। जगहि भाग्य सबहिन के तबै॥
कहि हरि अंतर्द्धान सु भये। देव तबहिं दैत्यन पहँ गये॥
मिलि बैठे हित बातैं करी। सिंधु मथन की इच्छा धरी॥
तब धरि हरि कच्छप अवतार। धारि पृष्ठ वह भूधर भार॥
यों हरि कमठरूप वह कर्‍यो। प्रकटि रमा सब कर दुख हर्‍यो॥
कल्प आदि कच्छप बपु गहे। भूधारी सु भिन्न कउ कहे॥

इत्यादि जगत दुःख हरिबे हेत कृपाकरि चारि अवतार प्रभु सतयुग में धारण कीन्हें तिनके अर्थ नमस्कार है।

पुनः त्रेता के तीनि अवतार। यथा—

चौ०-भयो प्रह्लादपुत्र बैरोचन। ताके बालि सु बिप्र दुख मोचन॥
शक्र जीति त्रिभुवन तिहि लीनो। सुर सबही कीन्हेउ सुख हीनो॥
तिनहित अदिति तपोब्रत कीनो। पुत्र होइ हरि तिहि सुख दीनो॥
सुरपति हित बामन बपु भयो। यज्ञ करत बलि पै चलिगयो॥
श्वेत बराह कल्प मन भावन। बार तीनि प्रकटे प्रभु बावन॥

प्रथम बास करि दानवमाहीं। यही रूप आये मख माहीं॥
ध्रुव सु यज्ञ में बहुरि सु आये। वैवस्वत मन्वन्तर पाये॥
ताके सप्त चतुर्युग गये। पुनि तव अदिति काशिपु के भये॥
ऐसे भूमि दान तहँ लीनो। तैसेइ रूप त्रिविक्रम कीनो॥
पुनि बलि को पाताल पठायो। त्रिभुवन पति तब इंद्र कहायो॥

पुनः परशुरामअवतार। यथा—

भये बहुरि हरि भृगुपति रूप। जीते सब भूतल के भूप॥
ऋषि जमदग्नि महातप साधे। सुरभी लही इंद्र आराधे॥
पुनि रेणुक नृपसुता बिबाही। दीन्हे बहुत दिना सुख ताही॥
तब सुत परशुराम इत नाम। प्रकटे गौरबरण अभिराम॥
उपवीतरु विद्या बहु पाई। शालिग्राम अचल महि जाई॥
तपहु तप्यो मरीचि गुरु कियो। तापहि मंत्र षडक्षर लियो॥
जपि बहु ध्यान कियो सुखऐन। श्याम स्वरूप कमलदल नैन॥
कीट भृंगिवत तनमय पाये। हरि तामाहिं प्रकट ह्वै आये॥
वैवस्वत मन्वन्तर भये। चतुर्युगी द्वाविंशति गये॥
कहुँ कहिगई सप्तदश जबै। नृप भय भूमि ब्रह्मद्रुह सबै॥
हरन भार भू युद्ध सुहायो। शिव सु धनुष विद्या गुरु पायो॥
माहिष्मती पुरी इक लसै। सहसबाहु अर्जुन तहँ बसै॥
दत्तात्रेय सेवा नृप कीन्हीं। करि संम्राट सिद्धि तिहि दीन्हीं॥
एक अनेक देह वह धरै। सब भूतल की रक्षा करै॥
कबहुँ गयो नृप सैन्य समेत। दर्शन हित जमदग्नि निकेत॥
नृप पूजे मुनि कहि सुरभी को। बांछित अशन दिये सबही को॥
नृप ह्वै चकित बंदि पदरेनु। तब मुनि पै माँगी वह धेनु॥
मुनि सु देव धन धेनु न दीन्हीं। बल करि नृपति खोलि वह लीन्हीं॥
मारि सैन धेनुसरिस भई। ह्वै अंतर्हि इंद्र पै गई॥

सैन्यक मरे देखि नृप कोपि। हन्यो मुष्टि मुनि धर्महिं लोपि ॥
मारि सु डरि निज पुर को धायो। त्यहि क्षणपरशुरामतहँ आयो॥
करि पितुक्रिया तहाँ सो चल्यो। भूप सुभट प्रथमहिं दलमल्यो॥
निकसि रुमल्लयुद्ध नृप कर्‍यो। सैन्य सहित मुनिसों संहर्‍यो॥
तिहिते डरि कुरुखेत के माहीं। भूमि के भूप भये यकठाहीं ॥
तिन अति घोर युद्ध तहँ लीन्हो। राम सकल संघार सु कीन्हो ॥

पुनः रामावतार। यथा—

सरयूतीर अवध सुख धाम। तहँ राजै दशरथ नृप नाम ॥
यज्ञ करत पायस नृप पाये। तीनि तियनकहँ तिन सु खवाये ॥
कर्‍यो तियनसुतचारि प्रकाशन। राम भरत लक्ष्मण रिपुनाशन॥
श्वेतबराह कल्प महि गन्यो। मन्वन्तर वैवस्वत भन्यो ॥
चतुर्युगी चौविंशति गयो। तब तामहिं त्रेतायुग भयो॥
चैत शुक्ल नौमी सुख धाम। मध्य दिवस प्रकटे श्रीराम ॥

दोहा—श्रीरघुबर बैभव अतुल, पूरण षडगुण धाम।
सब रसमय कीन्हें चरित, सबहि भुवन सुख काम ॥

पुनः कृष्णअवतार। यथा—

हरि बसुदेव हिये दर्शाये। थापे तिहि देवकि हिय आये ॥
बैवस्वत मन्वन्तर की पुनि। चतुर्युगी अष्टाविंशति गुनि ॥
द्वापर अंत नभसि असिता है। अष्टमि अरु बुध अर्द्धनिशा है ॥
हरि प्रकटे सु चतुर्भुज लहै। भये द्विभुज शिशु जननी चहै ॥

दोहा—भक्तमनोरथ देनहित, वासुदेव अवतार।
धर्मस्थापन दुष्ट बध, करन हरन भू भार ॥

पुनः बौद्धअवतार। यथा—

चौ०-यज्ञ करत असुरन बल बढ़्यो। सुरन हारि हरिको स्तव पढ़्यो ॥
तब प्रभु बौद्धरूप ह्वै सोहे। कहि पाखंड सु असुर बिमोहे ॥

निज यज्ञादि धर्म तजि दयो। तब सब सुरन जीति ते लयो॥
पुनि अघवृद्धि अंतकालि भई। सबठां म्लेच्छमयी ह्वै गई॥
जनक जु बिप्र विष्णु यशनाम। जननी देवप्रभा अभिराम॥
तिनके पुत्र कल्कि सुखधाम। हरि सो प्रकट ह्वै संभल ग्राम॥
होइ मनो जब अश्वारूढ़। मारे सकल म्लेच्छ कुल मूढ़॥
मेटि जु कलिकृत युग विस्तस्यो। धर्म जु चारि चरणयुत कस्यो॥
यों हरि केव विभव अवतार। प्रकटि करत जगजीव उधार॥
तिनके जन्म कर्म गुण गावत। होत अमल ते प्रभु पद पावत॥

इत्यादि अपने जनन के हित खलन के नाशकरता मुख्य दशविधि के बपु देह धारण कीन्हे तथा साधारण तौ नर नारायण कपिल व्यास पृथु ऋषभादि अमितरूप जिनकी संख्या नहीं तथा अगणित चरित्रकृत गिनती रहित चरित कीन्हे तथा नाम उच्चारण अर्थात् रूपलीला नामादि सुलभ जीवन को उद्धार करते हैं पुनः सुररंजन असुरन को मारि देवतन को आनंदकरता तथा सेवक प्रह्लादादिकन को सुख देनहारे तिन सीयनाथ करि जापना अर्थात् जिनकी विरदावली लोक वेद विदित है ऐसे सीतानाथ को नाम मैं जपता हौं हे श्रीरामचंद्र अमल सुयश भुवन प्रकाशक कृपा करिये अर्थात् दयारूप अमृतमय करुणा शीतलता सहित कृपारूप किरणिन करि मम शोकसंतापना मेरा दुःख संपूर्ण प्रकार की तापैं हरिलेहु सुखद शरण राखौ॥ ३। ४॥

मारुतसुत हनुमान दुष्टदलदलन महाबल।
कृपासिंधु बलधाम रामसेवक दावन खल॥ १॥
श्रीनाथ जक्त को नाथ जासु यश निज मुख गाई।
हरहु शोक संताप विनय सुनिये कपिराई॥ २॥

करजोरे बिनती करौं भक्ति देहु प्रभु आपना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।५॥

हे हनुमान्‌जी आपु मारुतसुत अर्थात् अतुलबलवंत पवन के पुत्र हौ पुनः महाबल रहा जिनके अक्षयकुमार कालनेमि आदि ऐसे दुष्टन को दलन मर्दि डारनेवाले हौ पुनः रामसेवकन के हेतु कृपासिंधु कृपारूप जलभरे समुद्रै हौ अर्थात् रामसेवकन पर सदा ऐसे रक्षक हौ जाते पंचमुख धारण किहे हौ चारि चारिहू दिशा को एक आकाश को सर्वत्र दृष्टि राखते हौ जहँ भक्तन पर बाधा देखते हौ तहां तुरतही निवारण करते हौ। यथा तंत्रागमे—

"येन वक्त्रेण विप्रेंद्र सर्वापदूभ्यां विनिर्ययौ।
कुर्वंतु शरणं तस्य सर्वशत्रुहरं परम्॥"

पुनः ब्रह्माण्डपुराणे—

"श्रीरामहृदयानंदं भक्तकल्पमहीरुहम्।
अभयं वरदं दोर्भ्यां कलये मारुतात्मजम्॥"

तथा खल दावन बलधाम अर्थात् यथा रामसेवकन हेतु कृपासिंधु हौ तथा रामसेवकन को दुःख देनहारे जे खल हैं तिनको दावन दलिडारने हेतु बलधाम बलके भरे मंदिर हौ १ शोभा ऐश्वर्यादि यावत् श्रीऐश्वर्यवंतन में है सो जिनकी दी हुई है ताते श्रीनाथ पुनः जक्तभरे को रक्षा करते हैं ताते जक्तनाथ इति श्रीनाथ जक्तनाथ जो रघुनाथजी सोई निज अपने मुखते जासु हनुमान्‌जी को यशगाइ बारंबार प्रशंसा कीन्हे ऐसे रघुनाथजी को प्यारे हे कपिराय बानरन में राजा हौ विनय सुनिये मेरा शोकसंताप हरहु कृपा करि श्रीरघुनाथजी की शरण करहु वचन सई सहायक होहु २ हे प्रभु आपना गुलाम जानि भक्ति देहु कर हाथ जोरे

बिनती करत हौं हे श्रीरामचंद्र कृपा करिये संपूर्ण प्रकार की ताप शोक दुःख मेरा हरिये सुखपूर्वक शरण में राखिये ॥ ३।५ ॥

दशकंधर तप कीन्ह दीन्ह वर त्यहि मुखचारी।
करत अनीति न डरो बिश्वबश कियो सुरारी ॥ १ ॥
कंपित सुर द्विज धेनु त्राहिकृत बहुत पुकारी।
होहु प्रसन्न अनाथ नाथ मम संकट भारी ॥ २ ॥
तासु पाप पुहुमी गरुव बहुबिधि करत कलापना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना ॥ ३।६ ॥

अब अवतार को हेतु कहत यथा दशकंधर रावण ने तप कीन्ह महाउग्र तपस्या कीन्हे तापर प्रसन्न ह्वै ब्रह्मा वरंब्रूहि कहे रावण बोल्यो। यथा—

चौ०--हम काहू के मरहिं न मारे। बानर मनुज जाति दुइ वारे ॥

तापर एवमस्तु इति चारिमुख ब्रह्माने वरदान दियो त्यहिवर के बलते सबको जीति लिया पुनः धर्म की हानि सुर मुनि साधुन को दंड सुर नर नागादि सबकी कन्या बरबस ब्याहि लेना सबको ऐश्वर्य हरि लेना इत्यादि अनीति करत में किसी को डर नहीं मानता रहा पुनः सुरारि अर्थात् देवतन को तौ शत्रुइ रहै अपर विश्व संसार में यावत् जीव हैं तिन सबको अपने वश में करि राखे स्वतंत्र काहू को नहीं राखा १ सुर देवता द्विज ब्राह्मण धेनु गौवें इत्यादि रावण की भयते कंपित तन त्राहिकृत त्राहि त्राहि करत अर्थात् हमारी रक्षा करौ इत्यादि वचन बहुत पुकारी कैसे पुकारे त्राहि त्राहि हे अनाथन के नाथ प्रभु मम भारी संकट में पुकार सुनि प्रसन्न होहु अर्थात् रावण की भय ते हमको बड़ा भारी संकट

है पुनः कोऊ रक्षक नहीं ताते अनाथ ह्वै पुकारते हैं आपु अनाथन को पालनेवाले हौ ताते कृपा करि हमारी भी रक्षा करौ इति सब पुकारे २ पुनः तासु रावण के समूह पापन करिकै पुहुमी पृथ्वी गरुवानी पापभार न सहिसकी ताते दुःखित ह्वै बहुविधि कलापना रोदन विलापादि करत प्रभु की शरण भई तथा कलिप्रेरित पाप कामादिकन करिकै भयातुर मह्रूं शरण ह्वै पुकारत हौं हे रामचन्द्र अमलयश प्रकाशक कृपारूप किरणिन करिकै मेरी संपूर्ण ताप शोक दुःख हरहु ॥ ३ । ६ ॥

ब्रह्मा शिव सनकादि आदि सुर मन्त्र दृढ़ायो ।
संकट मोचनहार नाथ सब ठाँव सुहायो ॥ १ ॥
त्राहि त्राहि गोहराइ प्रसन्न ह्वुव संकट छूटै ।
मरै दुष्ट दशकंध तबहिं देवन दुख टूटै ॥ २ ॥
प्रभु बिन को संकट हरै देहु दरशन गरुड़ासना ।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना ॥ ३ । ७ ॥

पृथ्वी सहित सुर नर नागादि भयातुर सब सत्यलोक को गये सबको दुःख सुनि ब्रह्मा अरु शिव तथा सनकादि आदि मुनीश सुर इन्द्रादि मंत्र दृढ़ायो सब मिलि विचारपूर्वक वार्त्ता करि एक सम्मति पुष्ट कीन्हे क्या पुष्ट कीन्हे कि संकटमोचन निर्हेतु जीवन को संकट छोड़ावनेवाला जो सबको नाथ है सो तौ सबठाँव सोहायो पृथ्वी जलाग्नि पवन आकाशादि सर्वत्र चराचर में सुन्दरी प्रकारते बास किहे है अर्थात् जहँ प्रेमसहित पुकारो तहँ प्रकट ह्वै आवै इति निश्चय कीन्हे १ प्रभु को सर्वत्र व्यापक जानि ब्रह्मादि त्राहि त्राहि अर्थात् हमारी रक्षा करौ इति त्राहि त्राहि गोह-

राइ कहे कि हे सबके पालन करनहार प्रभु प्रसन्न हुव आपु प्रसन्न होहु दया करहु तब सबको संकट छूटि सक्ता है आनभाँति नहीं काहेतें जब दशकंध रावण दुष्ट मरै तबहीं देवतन को दुःखरूप बंधन टूटैगो अर्थात् जब कृपाकरि आपु नररूपते अवतीर्ण होहु देवअंश बानरन को संग लै सकुल रावण को मारहु तब देवगणन के दुःख बंधन टूटि सक्के हैं २ बिन प्रभु देवतन को संकट और को हरै अर्थात् सुरासुर नर नाग यक्ष किन्नरादि कोऊ रावणते नहीं जीति सक्ता है ताते हे प्रभु जब आपही नररूपते अवतीर्ण होउ तब देवन को संकट हरौ ताते हे गरुड़ासन गरुड़पर आसीन होनेवाले प्रभु दरश देहु प्रसिद्ध ह्वै देवन को धीर्य देहु इत्यादि यथा संकटते आकुल ह्वै देवगण आपुको पुकारे तथा कलिकाल कामादि के संकटते आकुल ह्वै महूं पुकारता हौं हे रामचन्द्र अमल यश प्रकाशक कृपारूप किरणिन करिकै मेरी सम्पूर्ण तापैं शोक दुःख हरहु सुखद शरण में राखहु ॥ ३।७ ॥

दशस्यन्दनगृह जन्म लियो सुर मुनिदुख टारन।
दशकंधर बध करन हेतु भुवभार उतारन ॥ १ ॥
सकल लोक के नाथ नृपति के सुवन कहाये।
धन्य भाग्य कौशल सुता जिन गोद खेलाये ॥ २ ॥
स्वइ मूरति मम उर बसहु यहै करत हौं जापना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसन्तापना॥३।८॥

आकाशवाणी ते प्रभु देवतन को धीर्य दीन्हे कि तुम्हारे हेतु हम अवतार लेहँगे तुम अभय होहु तब ब्रह्मा देवतन ते कहे तुम बानर-रूप धरि पृथ्वी में बास करौ जाइ यहां सुर मुनि दुःखटारन देवता मुनि साधु भूमि इत्यादि सबको दुःख छुड़ावने हेतु दशस्यन्दन जो

अवधेश महाराज दशरथजी तिनके गृह में प्रभु जन्म लियो अर्थात् कौशल्या के रघुनाथजी कैकेयी के भरतजी सुमित्रा के लक्ष्मणजी शत्रुहनजी इति चारि रूपते अवतीर्ण भये कौन भांति सुर मुनि दुख-टारन दशकंधर वधकरन सकुल रावण को मारिबे हेतु पुनः भू जो पृथ्वी ताको पाप भार रहै ताके उतारिबे हेतु १ सकल लोक के नाथ यावत् लोकपाल हैं तिनके नाथ अर्थात् परमात्मा परब्रह्म सर्वोपरि ऐश्वर्य सो छपाय नृपति के सुवन कहाये ऐश्वर्य त्यागि माधुर्य में राजकुमार बने तब दशरथ महाराज की भाग्य की कौन प्रशंसा करिसक्ता है कौशलसुता जो कौशल्याजी तिनकी धन्य भाग्य है जिन बालक करि गोदी लै खेलाये अर्थात् वात्सल्यता के अधिकारते दशरथमहाराज सहज प्रभु के ऐश्वर्य को भूले रहत रहैं कारणपाइ कबहूं सुधि आइजाती रहै अरु कौशल्याजी पूर्वही भक्ति वर मांगि लीन्ह ताते सदा प्रभु का ऐश्वर्य जानती हैं इसहेतु इनकी धन्य-भाग्य कहे २ जो दशरथनन्दन कौशल्याजी की गोद में हैं सोई श्यामसुन्दर मूरति ममउर मेरे अन्तस् में बसहु यह मनोरथ किहे सदा नाम को जाप करता हौं हे रामचन्द्र अमल सुयश प्रकाशक कृपारूप किरणिन करिकै मेरा दुःख सम्पूर्ण प्रकार की तापैं हरहु सुखद शरण में राखहु ॥ ३ । ८ ॥

बिश्वामित्र जब सुनेउ राम को जन्म अवधपुर।
याँचेउ नृपसों जाइ दहु रामहिं मोहिं नृपबर ॥ १ ॥
ताड़कात्रास मुनि दुखित करन पावत नहिं यागहिं।
असुर बद्धकृत हेतु भूप रामहिं हम माँगहिं ॥ २ ॥
लय राम लषण सँग मुनि चले दुष्टदलन खलनाशना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसन्तापना ॥३।६॥

अवधपुर राम को जन्म अयोध्याजी में दशरथमहाराज के गृह में रघुनाथजी जन्म लीन्हे बाल कुमार पौगण्ड अवस्था बीतिगई अब किशोर अवस्था भये धनुषबाण लै लक्ष्य बेधने लगे इत्यादि हाल जब विश्वामित्र मुनि सुने तब हर्षिकै अयोध्याजी को चले पहुँचि सरयू स्नान करि राजदरबार आये महाराज आदर प्रणाम करि आसनपर बैठाये आगमन को कारण पूछे तब मुनि नृपसों याँचे हे नृपवर राजन में श्रेष्ठ मोहिं रामहिं देहु रघुनाथजी को माँगता हौं तिनको दीजिये १ कौनहेतु माँगता हौं सो हाल सुनिये जब मुनिलोग यज्ञ करने लागते हैं तब पुत्र सेनासहित ताड़का आइ विध्वंस करिदेती है महाउपद्रव करि सतावती है इत्यादि यज्ञ नहीं करन पावत ताते ताड़का के त्रास डर करिकै सब मुनि दुःखित हैं अरु आप धर्मवन्त मुनिन के रक्षक हौ ताते सहायक होहु हे भूप असुर बद्धकृत वध करिबे हेतु हम रामहिं माँगहिं अर्थात् हे दशरथ महाराज असुर जो अधर्म अनीतिकर्त्ता राक्षस तिनके मारिडारिबेहेतु श्रीरघुनन्दन को हम माँगते हैं जगमंगलहेतु धर्मस्थापन कार्य राजकुमारन को भी कल्याण है ऐसा जानि हर्ष सहित दीजिये इसभाँति माँगे तब महाराज दै दिये प्रणाम करि बिदा किये प्रभु माता पिता को प्रणाम करि चले २ दुष्टदलन खलनाशन हेतु राम लषण को संग लै मुनि चले इहां दुष्ट अरु खल तथा दलन अरु नाशन इनमें पुनरुक्ति देखात सो नहीं है काहेते दुष्टशब्द निन्दा बिषे सर्वत्र होत तथा प्रशंसा में सुष्ठु होत यथा॥

"निंदायां दुष्टसुष्ठु प्रशंसने इत्यमरः"

अरु पर हानिकर्त्ता परस्पर भेद करनेवालेन को खल कही यथा॥

"पिशुनः दुर्जनः खलः त्रयं परस्परभेदनशीलस्य इत्यमरः"

विवेके पुनः दलन चोट मारने को नाम है अरु नाश मारिडारने

को नाम है ताते दुष्ट जो छली मारीच है ताको दलन अर्थात् थोरिही चोट मारि उड़ावनेहेतु पुनः खल जो सेन ताड़का सहित सुबाहु तिनको नाश करिबेहेतु चले यथा उहां राक्षस बाधक रहे तिनहेतु विश्वामित्र की सहाय कीन्हे ताही भाँति मोपर कलिकाल कामादि बाधक हैं जप यज्ञ नहीं करने देते हैं ताते हे रामचन्द्र सुयशप्रकाशरू कृपारूप किरणिन करिकै मेरे शोक संताप हरहु ॥ ३ । ९ ॥

बधि ताड़का सुबाहु रामसुर द्विज हितकारी।
गौतम शापित नारि ताहि पदरजते तारी ॥ १ ॥
धनुषयज्ञ प्रण कियो जनक तहँवाँ पगुधारी।
सुर अरु असुर नरेश चारिदश भुवन के हारी ॥२॥
स्वइ शिवचाप भंज्यो प्रभू छूटी जनक कलापना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।१०॥

सुर द्विज हितकारी राम ताड़का सुबाहु को बधि अर्थात् सुर देवतन के हितकारी याते भये कि विघ्नकर्त्ता राक्षस मारे पुनः यज्ञ को पूर्ण कीन्ह तामें भाग पाये पुनः द्विज ब्राह्मणन के हितकारी याते भये कि यज्ञ कीन्हेते उनको मनोरथ सिद्ध भया इति सुर द्विज हितकारी रघुनाथजी सेना सहित ताड़का सुबाहु को मारि यज्ञ की रक्षा कीन्हे पुनः गौतमशापित गौतमऋषि के शाप दीन्हेते नारि अहल्या पाषाण ह्वैगई रहै ताहि पदरज ते तारी पांयन की धूरि वामें छुवाइ पाप शाप ते उद्धार करि दिव्यपावन उत्तम स्त्री बनाय वाके पति को मिलाइ दीन्हे १ पुनः जनकपुर में धनुषयज्ञ रहै तहां जनकजी प्रण किये रहैं भाव जो शिवधनुष तोरी ताको कन्या विवाहब यह हाल सुनि तहँवाँ पगु धारी विश्वामित्र सहित प्रभु

गये जनकजी मिलि आदरसहित टिकाये पुनः रंगभूमि में सुर जो देवता असुर जो दैत्य पुनः नरेश नरन में जे भूमिपर राजा रहे इत्यादि चारिदश चौदहौ भुवन के राजा बल उपाय करि हारि गये धनुष न उठा २ जो काहू को उठावा न उठा सोई शिवचाप शिव को धनुष महाकठोर ताको प्रभु भंज्यो रघुनाथजी सहजही तोरि डारे ताते जनककलापना छूटी जनकजी की संदेह मिटी प्रसन्न भये इसी भाँति मह्व संकट में परा हौं हे श्रीरामचन्द्र कृपा करिकै मेरे शोकसंताप हरौ॥ ३। १०॥

टूटत धनु भयो शोर परशुधर तबहीं आयो।
कंपित नृप सब भये सहित पितु नाम सुनायो॥१॥
परशुराम मन गुनेउ राम अवतार लियो अब।
दियो शरासन बाण गवन कीन्हेउ बनहीं तब॥२॥
सिय बिबाहि निवसे अवध हर्षसों करैं सराहना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।११॥

कठोर धनुष जब टूट ताको शोर महाकठोर शब्द भयो सो सुनत ही तबहीं ताहीक्षण परशुधर परशुराम कोपसहित जनकपुर को आयो तिनको देखतही सब नृप कंपित भये डर करिकै सब राजन की देहैं कांपि उठीं आसन ते उठि उठि आइ पितनसहित आपना नाम सुनाय सब दंडप्रणाम कीन्हे १ धनुष तोरनहार जानि रघुनाथजी सों अनेक विधि ते वार्त्ता होतरही रघुनाथजी के मुख की चेष्टा प्रसन्नै बनीरही सो देखि परशुराम मन में गुनेउ विचार कीन्हेउ कि मेरे सन्मुख किसी राजा को धीर्य धरा नहीं रहत अरु ये राजकुमार निर्भय प्रसन्नतापूर्वक वार्त्ता करिरहे हैं तौ मनुष्य

नहीं हैं पुनः कठोर शिवधनुष मनुष्यों का तूरा नहीं टूटिसक्ता रहै पुनः ऐसी स्वरूपता भी मनुष्यों में नहीं ह्वै सक्ती है ताते अब राम-अवतार लियो रघुवंश में रामावतार भयो ताते ये राजकुमार परब्रह्म हैं ऐसा विचारि आपना शरासन जो धनुष तथा बाण परशा देदिये बहुत भाँति स्तुति वारंवार प्रणाम करि तब बनहिं गवन किये तपस्याहेतु वन को चले गये २ परशुराम के गये पीछे जनकजी दूत पठाये बरात सजि दशरथ महाराज आये पुनः सिय विघाहि सुदिन लग्न सोधि चारिउ कुमारन को चारिउ कुमारी विवाहि दिये इति जानकीजी को विवाहि आइ अवध निवसे सुख-पूर्वक अयोध्याजी में वास कीन्हे सो हर्ष आनन्द को सुर नरादि सबै सराहना करते हैं यथा सबको आनन्द कीन्हेउ हे श्रीरामचन्द्र तथा मोपर कृपा करिकै मेरे भी दुःख तापन को हरहु सुखपूर्वक शरण में राखहु ॥ ३ । ११ ॥

नृप दशरथ तब गुनेउ चौथपन भयो हमारा ।
देउँ रामकहँ राज हर्षि उर किये बिचारा ॥ १ ॥
गुरुसों आज्ञा लीन राज को साज सजाई ।
पुरवासी भये हर्ष सुने जब लोग लुगाई ॥ २ ॥
रामराज सुर शोच उर क्यहि विधि मिटै कलापना ।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना ॥ ३ । १२ ॥

विवाह भये पीछे बारह वर्ष रघुनाथजी सुखपूर्वक अयोध्याजी में वास कीन्हे पिता की आज्ञा लै विधिवत् नीति धर्मपूर्वक राजकाज करते रहे सो शुभ आचरण देखि तब नृप महाराज दशरथ गुनेउ मन में विचार कीन्हेउ कि अब हमारा चौथपन भयो अर्थात् बाल युवा मध्य गयो वृद्धावस्था ते मरणकाल निकट आयो अरु मेरे पुत्र

को विचारने ते धर्मरात ते राज्य होने में परस्पर विग्रह है जाने को कारण है काहे ते कौशल्या मुख्य पटबंधनी रानी तिनके पुत्र रघुनंदन भाइन में जेठे अरु स्वरूप बल विद्या बुद्धि धर्माचारादि सब गुणन करिकै सब भाइन ते उत्तम तिनको राज्याभिषेक होना लोक वेद कुलादि सब रीति ते उत्तम है परन्तु तामें विग्रह को कारण यह है कि बीरा तैल मातृपूजनादि है गयो विवाह के दिन कौशल्या को रावण हरि लै गया इस हानि ते उनकी छोटी बहिनी सुमित्रा को राजा ने ब्याहि दिया पीछे जब कौशल्या मिलीं तिनको विवाह भया यद्यपि बड़ी मानी कौशल्यै गईं परन्तु दैवयोग प्रथम पाणिग्रहण तौ सुमित्रै को भया इस कारण सुमित्रा के पुत्रन को राज्य पर दावा अटता है तिनके दोऊ पुत्र जोरिहा के भये ताहूमें विरोध को कारण है काहेते प्रथम लक्ष्मण उत्पन्न भये ताते उनको राज्य को दावा है परन्तु जो गर्भ में प्रथम स्थित होता है सो पुत्र पीछे प्रसव होता है ताते शत्रुहन को राज्य को दावा अटता है पुनः राजा केकय को हम पूर्वही समय पत्र लिखि दिया है कि जो तुम्हारी कन्या के पुत्र होइगो ताही को हम राज्य देइँगे तब उन कैकेयी का विवाह किया इस कारण सबनते सबल भरत को राज्य पर दावा अटता है तौ मेरे मरे पीछे राम को राज्य होना दुर्घट है काहेते जो भाइन में विरोध भी न होवै तौ जापर वशिष्ठ अरु गर्गाचार्य साक्षी अरु सभामध्य को मेरा लिखा समयपत्र ताको कौन भंग करिसकैगो पुनः रघुनन्दन धर्मधुरीण मेरा लिखा देखि वै आपही वाको प्रमाण करैंगे अरु राज्यमद बड़ा सबल होता है कदाचित् भाइन में विरोध होइ तौ न मालूम कैसा उपद्रव उठै ताते मैं अपने जीवत ही सब विघ्न मिटाइ देउँ इत्यादि मनमें गुनि महाराज हर्ष सहित उर में विचारे कि अबहिनै मैं रघुनन्दन को राज्य

दैदेउँ इसीते सब उपद्रव शांत ह्वै जाइगो १ इत्यादि बिचारि गुरु- वशिष्ठ तिनते पूछि आज्ञा कराय लिये पुनः मंत्रिन को आपु आज्ञा दै राज्याभिषेक को साज सजायो रामचन्द्र को राज्याभिषेक होइगो इत्यादि हाल सुनि पुरवासी लोग लुगाई स्त्री पुरुष सब हर्षित भये अर्थात् मन भावत सुनि परम आनन्द भये ताते घर घर मंगलगान होने लगा २ रामराज सुरउर शोच रघुनन्दन को राज्याभिषेक सुनि देवतन के उर अंतर में यह शोच भया कि जो रघुनाथजी राज्य करैंगे तौ तौ हमारा कलापना दुःख कैसे मिटैगो यह बिचारि सर- स्वती को पठाइ मंथराद्वारा कैकेयी की मति बौराय वनवास कराय दिया ऐसे कृपासिंधु जो सुरकाजहित राज त्यागि वन को चलेउ तथा कलि कामादि करिकै महूं दुःखित हौं हे रामचन्द्र कृपारूप किरणिन करिकै मेरा दुःख तापैं हरहु ॥ ३ । १२ ॥

राज तजे बन चले अवधपुर भयो अनाथा।
असुरबद्ध के हेतु देव कहँ करन सनाथा ॥ १ ॥
केवट धोये चरण हर्षि जलपान कियो है।
तरिगये कुलपरिवार भाग बड़ तासु भयो है ॥ २ ॥
पतित उधारण नाम रामकोविरद्बढ़ावत आपना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम्हरहु शोक संतापना॥ ३ । १३॥

असुर जो राक्षस रावणादि तिनके वध नाश करिबे हेतु पुनः अनाथ जो रहे इंद्रादि देवता तिनकहँ सनाथ करिबे हेतु राज तजे रघुनाथजी लषण जानकी सहित वन को चले ताते अवधपुर अनाथ भयो प्रभुरहित पुर मशान से देखात वियोग दुःख ते पुरजन एक एकन को भूत से देखते हैं अर्थात् मंगलमय पुरी सो अमंगल

देखाती है १ गंगातट में उतरत समय प्रेमहठ करि केवट प्रभु के चरण धोइ सोई जल हर्षसहित परिवार समेत पान कियो ताके प्रभाव ते तासु केवट को बड़ा भारी भाग अर्थात् अनेकन जन्म की सुकृत बटुरि कै आइ उदय भई ताते कुल परिवार सहित सब तरि-गये अर्थात् जे पितृ नरक में भी रहे ते ऊपर धाम को गये जे वर्त-मान हैं ते परधाम के अधिकारी भये अर्थात् यथा अवध अनाथ भयो तथा बनमग सनाथ होत जात २ काहे ते वनमग सनाथ होत जात कि पतितन को उद्धार करनहारा श्रीरघुनाथजी को नामै है तहां जो रूप में गुण होते हैं सोई नाम द्वारा प्रसिद्ध होते हैं तौ रूप क्यों न सुलभ पतितन को उद्धार करैं इस हेतु आपना विरद जो पतितपावनतादि को बाना ताको बढ़ावते हौ ताही भाँति हे श्री-रामचन्द्र कृपारूप किरणिन करिकै मेरी संपूर्ण तापैं दुःख हरहु॥३।१३॥

कियो प्रयाग निवास प्रात मज्जन किय बेनी।
कलुषपुंज को दलनि करनिहरिहर पद देनी॥ १॥
भरद्वाज सों मिले गवन आगे पुनि कीन्हा।
वाल्मीकि सुखधाम रामकहँ आज्ञा दीन्हा॥ २॥
चित्रकूट प्रभु बसहु बेगि देवन दुखनाशना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।१४॥

गंगा उतरि बीचवास करि चले जाय प्रयाग में निवास रात्री को वास करि प्रात उठि त्रिबेनीजी में मज्जन कीन्हे कैसी हैं त्रिबेनी कलुष जो पाप-पुंज समूह तिनको दलनि अर्थात् असंख्यन पाप मिटाइ देनहारी पुनः सुकृत कैसी करनहारी हैं हरिहर पद वैकुंठ कैलास में वास देनहारी हैं १ भरद्वाज सों प्रणाम करि मिलि प्रेम-

पूर्वक वार्त्ता करि विदा भये पुनः आगे वन को गमन कीन्ह वाल्मीकि सों मिलि वास को स्थान पूछे तब वाल्मीकिजी रामकहँ सुखधाम रघुनाथजी को सुखदेनहारा जो धाम है तहां वास करिबे को आज्ञा दीन्हे २ क्या आज्ञा दीन्हे कि हे प्रभु चित्रकूट में वास करहु पुनः वेगि देवनदुख नाशना अर्थात् इहं न बसे रहेउ शीघ्र ही देतवन को दुःखनाश करिबे हेत आगे को जाना यथा देव दुखित जानि कृपा कीन्हे तथा हे रामचंद्र कृपारूप किरणिन करिकै मेरी संपूर्ण तापैं दुःख हरहु ॥ ३ । १४ ॥

चित्रकूट बसि अमित कोलभिल्लन कृत पावन।
रहे तहां मुनिबृन्द सकल भय शोक नशावन ॥ १ ॥
प्रभुहिं मनावन भरत जात शोचत मनमाहीं।
पुरबासिन लिये संग जाइ पहुँचे प्रभु पाहीं ॥ २ ॥
मिले भरत अस्तुति करत शरण राखु प्रभु आपना।
कृपा करिय श्रीरामचंद्र मम हरहु शोकसंतापना ॥३।१५॥

इहां वास करिवे को क्या प्रयोजन रहै सो कहत कि चित्रकूट में बसिकै प्रभु अमित अनगनतिन कोलभीलन को पावनकृत पवित्र कीन्हे अर्थात् चित्रकूट प्रभु को सुख विलासस्थान है तहांके वन-वासी किरातादि हिंसारत अधम रहे अरु सुलभ जीव उद्धारणहित प्रभु अवतीर्ण भयेहैं ताते प्रथम तौ दर्शन दै उनको कृतार्थ कीन्हे अर्थात् पूर्व के पाप हरि लीन्हे पुनः प्रीतिपूर्वक वार्त्ता करि हिंसकास्वभाव मि-टाय शुद्ध आपने सनेही बनाय परमपद के अधिकारी करि दीन्हे पुनः तहां मुनि वृंदसमूह मुनि वास किहे रहे तिनको राक्षस सतावते रहे तिन सकल के शोक नशावनहार भये अर्थात् प्रभु को बल पाइ अभय ह्वै जप पूजा यज्ञादि करने लगे शोक दुःख प्रभु नाश करि

देते भये १ पुनः भरत प्रभु मनावन जात अर्थात् खबरि पाइ ननेउरे ते आइ पितुक्रिया करि राज्य त्यागि वशिष्ठादि पुरवासिन को साथ लिहे प्रभु को मनावन लौटारि लावने हेतु मनमाहिं शोचत दुःखपूर्वक विचार करत भाव प्रभु लौटि हैं वा न लौटि हैं मेरा कलंक कैसे मिटी इति शोचत जातसंते भरतजी जाइ प्रभु पाहीं रघुनाथजी के पास चित्रकूट में पहुँचे २ प्रणाम करि मिले पुनः रघुनाथजी सों भरतजी स्तुति करत हे प्रभु अपना सेवक जानि शरण में राखिये भाव लौटि अयोध्याजी में जो राजसिंहान पर बैठिये तौ उत्तमै सेवकाई दीजिये नातरु लषण शत्रुहन को लौटारिये मो को सेवकाई में राखिये यथा भरतजी बिनती करते हैं तथा मेरी प्रार्थना है हे रामचन्द्र कृपारूप किराणिन करिकै मेरी संपूर्ण तापैं दुःख हरहु शरण राखहु॥ ३। १५॥

भरत लीन्ह उर लाय राम बहुविधि समुझाये।
दिये पादुका राम भरतकहँ बहुत सिखाये॥ १॥
सुनहु बन्धु मम बचन अवधकहँ बेगि सिधावहु।
करहु प्रजाप्रतिपाल तिहूंपुर सुयश बढ़ावहु॥ २॥
लै पादुका अवधपुर भरत करतहैं जापना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसन्तापना॥३। १६॥

गलानि शोक भरे देखि प्रीतिपूर्वक उर में लगाय अन्तर को सनेह प्रसिद्ध कीन्हे इति भरत को छाती में लगाइ पुनः रघुनाथजी धैर्य देने हित बहुत विधि ते समुझाये भाव तुम्हारा अन्तर को साँचा सनेह सो मैं नीकी भाँति जानत हौं तौ तुम किस बातको शोच करते हौ मेरी आज्ञा ते मेरिही राज्य को काज करौ इति समुझाय धैर्य दीन्हे पुनः प्राणन के अवलम्ब हेत आपने पादुका खराऊं दीन्हे भाव

इनहीं की सेवा करौ सो हमारिही सेवा है पुनः रघुनाथजी भरत को बहुत सिखाये हितोपदेश दीन्हे १ क्या प्रभु हितोपदेश दीन्हे हे बंधु भाई भरत मेरे वचन सुनहु अंगीकार करहु क्या अंगीकार करहु वेगि अवधकहँ सिधावहु अर्थात् महाराज सुरधाम गये अरु मैं वन में तुमहूं मेरे समीप हौ सूनी राज्य में जो किसी भाँति प्रजन को दंड होइ तौ हम तुम पर बड़ा दोष आवैगो यथा चौ०—

जासु राज प्रियप्रजा दुखारी। सो नृप होइ नरक अधिकारी॥

पुनः वाल्मीकीये—

"पौरकार्याणि यो राजा न करोति दिने दिने।
संवृते नरके घोरे पतितो नात्र संशयः॥"

इति विचारि शीघ्रही अयोध्याजी को जाउ जाइ प्रजा प्रतिपाल करहु अर्थात् नीतिविधि प्रजा जनन की रक्षा करहु अनीति करतन को दंड करहु इति धर्म नीति आचरण करि तिहुँ पुर सुयश बढ़ावहु अर्थात् तीनिहुँ लोक में तुम्हारा सुन्दर यश होइगो २ प्रभु की आज्ञा मानि पादुका खराऊं लैकै प्रभु को प्रणाम करि वन ते चले अयोध्याजी में आय सिंहासन पर पादुका स्थापित करि पुनः भरतजी नेम व्रत सहित नंदिग्राम में बैठि प्रेम ते प्रभु को नाम जपने लगे इसी भाँति महूं नाम जपत हौं हे रामचन्द्र कृपा करिकै मेरे शोक संताप हरहु॥ ३। १६॥

पाहि कहत बचु प्राण चक्षु इक कियो जयन्ता।
जब बिराध बध कियो रामसुर सुयश कहन्ता॥१॥
पुनि अगस्त्य पहँ गयो कहेउ मुनि असुर सँहारहु।
अब बिलंब क्याहि हेतु बेगि देवन दुख टारहु।

पंचबटी कृत बास तब अभय करत मुनि जापना।
कृपाकरिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।१७॥

पाहि कहत जयंत के प्राण तौ बचे परन्तु एक चक्षु एकही नेत्र राखे एक फोरि डारे अर्थात् प्रभु के बल की थाह लेने हेतु इन्द्रपुत्र जयंत आया तासमय में प्रभु किशोरीजी को फूलन को शृंगार कीन्हे अंक में शीश धरि आलस वश भये ताही समय जयंत काक-वेष ते आइ चरण चोंच किशोरीजी के प्रहार किया जब रुधिर चला तब रघुनाथजी जाना सो बल देखाइबे हेतु सींक को धनुष बाण चलाया तासों प्राण बचाव न देखा नारद के सिखये ते त्राहि त्राहि कहि प्रभु के पायन परा तब एक नेत्र हीन करि प्राण बचाय दिये अर्थात् माधुर्य में स्त्री को छुइलेना वधयोग्य है पुनः ऐश्वर्य में प्रभु भागवतापराध नहीं क्षमा करते हैं पुनः प्रभु को बाण अमोघ है वृथा नहीं जाता है इसहेतु शरण आये पर भी एक नेत्र हरे पुनः आगे चले वन में बड़े वेगते बिराध धावा ताको जब प्रभु वध किये मारिडारे तब सुर राम सुयश कहंता देवता रघुनाथजी को सुंदर यश गान करने लगे १ पुनः प्रभु आगे चले अगस्त्यऋषि के पास गये दंडप्रणाम करि बैठे तब मुनि कहेउ हे प्रभु अब विलंब क्यहि हेतु करते हौ असुरसँहारहु रावणादि राक्षसन को मारि वेगि देवन दुख टारहु देवतन को बड़ा दंड है सो शीघ्रही मिटाइ देहु अब जाइ पंचवटी में कछु काल वास करहु २ पंचवटी कृत वास अगस्त्य मुनि की आज्ञा ते प्रभु जाइ पंचवटी में वास कीन्हे तब प्रभु को बल पाइ अभय है कै मुनि जापना भजन ध्यान करने लगे यथा मुनिन को अभय कीन्हेउ तथा हे रामचन्द्र कृपारूप किरणिन करिकै मेरे शोक संपूर्ण तापन को हरहु सुखद शरण में राखहु॥ ३ । १७॥

शूर्पणखा छल करन हेत जब प्रभुपहँ आई।
नाक कान कियो भंग अनुज आज्ञा प्रभु पाई ॥१॥
खरदूषण त्रिशिरादि बीर जूझे समुदाई।
कनक कपटमृग बधेउ दीन्ह गीधहि गति जाई॥२॥
बधि कबंध शबरीभवन गवन कीन्ह दुखनाशना।
कृपाकरिय श्रीरामचंद्र मम हरहु शोकसंतापना ॥३। १८॥

जब शूर्पणखा छल करन हेतु प्रभु पहँ आई अर्थात रावण की बहिनि शूर्पणखा एक समय पंचवटी को आई युगल कुमारन को देखि काम करिकै मोहित ह्वै प्रभुसों अपने विवाह की याचना किया तामे छल यह है कि है तौ विधवा वृद्ध कुरूप अरु कुमारी युवावस्था की स्वरूपवंत बनि वार्ता कीन्ही इत्यादि छल करने जब प्रभु के पास आई अनेक छल चातुरी दोऊ दिशि ते भई जब अपमान वचन लषण कहे तब प्रतिकूल दृष्टि जानकीजी पर किया तब प्रभु की आज्ञा पाय अनुज लक्ष्मणजी नाक कान भंग किये काटि लिये १ पुनः शूर्पणखा खर के पास जाइ सब हाल कहि सेनासहित चढ़ाय लाई प्रभुसों युद्ध किया पुनः खरदूषण दोऊ तथा त्रिशिरा सहित अपर समुदाई बहुत सेना के वीर ते सब प्रभु के सन्मुख जूझे मरे तब शूर्पणखा जाइ रावण ते सब हाल कही तब रावण मारीच को साथ लै आया मारीच कंचनमय दिव्य मृगा बनि प्रभु के आश्रम ढिग ह्वै निसरा तब किशोरीजी के कहे प्रभु मृग के पाछे धाये जाइ दूरि मारे सो लक्ष्मण नाम लै टेरा सो सुनि लक्ष्मणजी को पठाये सून्य बीच देखि रावण हरि लै चला जटायु धाय युद्ध करि घायल भया तब लै कै लंका में ह्वै रहा इति कनकमय कपट मृगरूप

मारीच को बधे मारे पुनः सून आश्रम देखि किशोरीजी को ढूंढ़ने हेतु दक्षिण दिशि को प्रभु चले आगे गीध जटायु घायल मिला सब हाल सुनि वाको शुभगति दीन्हे २ पुनः आगे चले कबंध राक्षस मिला ताको बधि मारि गति दै पुनः दुखनाशन सुखद प्रभु शबरी के भवन घर को गवन कीन्हे ताके दिये फलखाय ताहू को शुभगति दीन्ही इसी भाँति हे श्रीरामचंद्र कृपारूप किरणिन करिकै मेरो शोक संताप दुःख सम्पूर्ण तापन को हरहु शरण राखहु ॥ ३ । १८ ॥

बालित्रास सुग्रीव नगर तजि गिरिपर बासा।
खोजत सिय रघुनाथ लषण पहुँचे गिरिपासा ॥ १ ॥
देखत व्याकुल भये कीशपति चले पराई।
आइ पवनसुत कहेउ शोच त्यागहु कपिराई ॥ २ ॥
समाचार मैं लेन जात हौं धीर धरहु मन आपना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना॥३।१९॥

बालि की त्रास मारिडारने को डर करिकै अपना नगर तजि घर छांडि गिरि पर बासा वहां ऋषि की शाप ते बालि नहीं जाइसक्ता रहै इसहेतु ऋष्यमूक पर्वत पर बसते हैं इहां पंपासर पर नारद ते वार्त्ता करि आगे चले लषण रघुनाथ सिय खोजत जानकीजी को ढूंढ़तसंते जहां सुग्रीव रहैं तेहि पर्वत के पास प्रभु पहुँचे १ अतुल बल प्रतापवंत प्रभु को देखतही बालि के पठाये हुये जानि डर ते व्याकुल भये ताते कीशपति वानरराज सुग्रीव पराय भागि चले तब पवनसुत हनुमान्जी आय कहेउ कि हे कपिराय वानरराज सुग्रीव शोच त्यागहु अर्थात् धर्मवंत देखि परते हैं ताते इन पुरुषन को देखि मारने की भय न मानहु अथवा विना जाने विचार करि-

लीन्हे सहसा किसी को शत्रु मित्र न मानि लेना चाहिये ताते मिलि वार्त्ता करि इनको हाल जानिलेना चाहिये २ हनुमान्‌जी कहे कि हे कपिराज तुम तौ अपने मन में धीर धरहु भय त्यागि थिर है बैठहु अरु मैं इन पुरुषन को मरम अंतर को गुप्त हाल लेने हेतु जाता हौं ऐसा कहि गये जाइ प्रणाम कीन्हें यथा कपिराज पर कृपा कीन्हेउ तथा हे रामचन्द्र मेरी शोक संतापना कृपाकरिकै हरहु ॥ ३ । १९ ॥

हनुमत चीन्हे नाथ नाथ निज दासहि जानी।
भक्ति बिमल बरदेइ मित्र कृत शारँगपानी ॥ १ ॥
बालिबधे कपिराज थापि ऋतु मेघ गँवाये।
करमुद्री दै सियउदेश हनुमान पठाये ॥ २ ॥
उहां सिया निशि दिन जपत रामनाम मन आपना ॥
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥ ३।२०॥

हनुमत् चीन्हे नाथ हनुमान् तौ रघुनाथजी को चीन्हि लिये कि मेरे स्वामी येई हैं तथा रघुनाथौजी अपने दास हनुमान्‌जी को जानि लिये कि मुख्य हमारे सेवक हनुमान् येई हैं चीन्हिबे को कारण यह है कि बालअवस्था में प्रभु वानर को बच्चा मांगे तब दशरथजी बहुत बच्चा मँगाइ मँगाइ दीन्हे तिनको न लेवैं पुनः मांगा करैं तब वशिष्ठजी सों महाराज पूछे तिन कहे कि इन बच्चन को न लेइँगे हनुमान् अंजनीपुत्र को मांगते हैं सो सुनि महाराज सुमंत को पठाये ते जाइ अंजनी ते मांगि लाये तिनको पाइ प्रसन्न रहे दश वर्ष की अवस्थातक साथही राखे जब प्रभु विद्या पढ़ने लगे तब महाराज हनुमान्‌जी को अंजनी के पास पठइ दीन्हे यह पद्मरामायण में प्रसिद्ध है मुख्य चीन्हिबे जानिबे को यही हेतु है पुनः हनुमान्‌जी

सूर्यन के लगे विद्या पढ़े तिन गुरुदक्षिणा मांगे कि यावत् तुम्हारे स्वामी रघुनाथजी न मिलैं तावत् तुम हमारे पुत्र सुग्रीव के निकट रहौ जब रघुनाथजी सों सुग्रीव ते मिलाइ मित्रता कराइ दिहेउ तब तुम हमते उऋण ह्वै जैहौ इत्यादि कारण रहे जब विप्ररूप प्रणाम करि हनुमान्जी पूछे कि आपु को हौ तब प्रभु बोले कि हम कोशलेश दशरथ महाराज के पुत्र हैं राम लषण नाम पितु आज्ञा ते वन आये इहां हमारी स्त्री को निशाचर हरि लै गया ताको हम ढूंढ़ते हैं अब बतावो तुम को हौ इत्यादि सुनि हनुमान्जी चीन्हे कि येई हमारे नाथ हैं पुनः विप्ररूप त्यागि वानररूप ते जब पायन परे तब रघुनाथजी जानि लिये कि हमारे सेवक हनुमान् येई हैं पुनः शार्ङ्गपाणि शार्ङ्ग धनुष है जिनके हाथ में तेई रघुनाथजी प्रेम सहित प्रणाम करत देखि विमल जामें कामना स्वारथादि किसी भाँति को मल नहीं है ऐसा विमल भक्ति वरदान दै कै पुनः मित्रकृत सखा करि माने १ पुनः हनुमान्जी लै कै सुग्रीव को मिलाय मित्रता कराये मित्र को दुःखित जानि प्रभु बालि बधि मारिकै कपि वानरन के राजा करि सुग्रीव को थापे किष्किन्धा में राज्याभिषेक कराये आपु प्रवर्षणगिरि पर वास करि मेघऋतु गवाँये वर्षाकाल व्यतीत किये शरदृऋतु आये पर अनेक वानरन सहित हनुमान्जी के कर हाथ में अपनी मुद्रिका चिह्न हेतु दै कै प्रभु सियउदेश अर्थात् जानकीजी को ढूंढ़बेहेतु हनुमान्जी को पठाये २ उहां सिया अपना मन निशि दिन उहां लंका में जानकीजी अपने मन में रातिउ दिन रामनाम जपती हैं भाव वियोग ते करुणारस भरी संयोग हेतु सब काल में प्रभु का सुमिरण किहे रहती हैं इसी भाँति महूँ आरत हौं हे श्रीरामचन्द्र कृपारूप किरणिन करिके मेरे शोकसन्तापन को हरहु अपनी शरण में राखहु ॥ ३ । २० ॥

हर्षि चले हनुमान भाग्य निज करत बड़ाई।
खोजत सर गिरि खोह ऋक्ष कपि संग सहाई ॥ १ ॥
गये सिंधुतट सकल शोच बश बचन उचारे।
यहां न सियसुधि मिली उहां गय मृत्यु हमारे ॥ २ ॥
यहि बिधि अंगद शोच बश बहुबिधि करत कलापना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।२१॥

निज भाग्य बड़ाई करत हनुमान् हर्षिकै चले अर्थात् मुद्रिका पाइ अपने ही हाथ कार्य होने को निश्चय जानि अपनी भाग्य की बड़ाई करत संते आनंद सहित हनुमान्‌जी चले जामवंत आदि ऋक्ष तथा कपि अंगदादि वानर सहाय हेतु संग में लिहे सर तड़ाग नदी आदि जल में तथा गिरि पर्वत वन ग्रामादि भूतल में खोजत जानकीजी को ढूंढ़त फिरते हैं १ इसी भाँति ढूंढ़त फिरतसंते सिंधु-तट समुद्र के किनारे पहुँचे मास की अवधि निकट आई अरु किशोरीजी की खबरि न मिली ताते सब शोचवश भये अरु अंगद आरत ह्वै वचन उचारे बोले क्या दुःखित बोले कि इहां तौ जानकी-जी की सुधि खबरि नहीं मिली अरु विना खबरि मिले उहां घर गये पर हमारी मृत्यु है अर्थात् अवधि बादि गये कपिराज प्राण हरिलेई २ इसी भाँति अंगद शोचवश ते दुःखपूर्वक विचारतसंते बहुत विधि ते कलापना विलाप-वचन कहत रहे ताही भाँति महं शोच संकट-वश हौं हे रामचन्द्र सुयश प्रकाशक कृपारूप किरणिन करिकै मेरे शोक दुःख संपूर्ण प्रकार की तापन को हरिलेहु सुखद शरण में राखहु ॥ ३ । २१ ॥

दुखित अंगदहि देखि ऋक्षपति बचन उचारी।

मिलिहहिं रघुपतिनारि शोच कृत मिथ्या भारी॥ १॥
रहेउ बिबर महँ गीध बिबर तजि बाहेर आवा।
करौं सबन कहँ अशन अशन बिधि मोहिं पठावा॥२॥
सो सुनि व्याकुल कीश सब चले भाजि त्यहि त्रासना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।२२॥

अंगद सबके नायक हैं तिनको दुःखित देखि देखि ऋक्षपति धीर्य-दायक वचन उचारे अर्थात् जामवन्त मंत्री हैं पुराने हैं चतुर हैं ते बिचारे कि जो मालिक कादर भया तौ सेना सब परमकादर ह्वै जाइगी तब कार्य होनेवाला भी न होइगा अरु असमय में धीर्य करने ते अयोग्य भी कार्य सिद्ध होता है यह बिचारि जामवंत धीर्य-दायक वचन कहत कि बड़ाभारी शोच वृथा ही करते हौ काहेते जिनको नाम लेने ते लौकिक पारलौकिक सब कार्य सिद्ध होते हैं तिनहीं के कार्यहेतु आयो तब क्यों संदेह करते हौ मन थिर करि ढूंढ़ौ रघुपति की नारि श्रीजानकीजी अवश्य मिलि हैं १ सब बैठे जहां बातैं करते रहैं तहैं पर्वत के कंदरा में गीध संपाति बैठा रहै सो इनकी बातैं सुनि विवर तजि गुहा ते निसरि बाहेर आवा पुनः बोला कि मोहिं विधि अशन पठावा ब्रह्मा ने मेरे हेतु उत्तम भोजन पठै दिया ताते सबन कहँ अशन करौं सब वानर ऋक्षन को भोजन करिलेउँगो २ सोई संपाति के वचन सुनिकै त्यहि त्रासना त्यहि के डर करिकै व्याकुल ह्वै कीश वानर सब भागि चले अर्थात् एक प्राणघात के शोच ते अधीर्य रहबै करैं दूसरा कराल निश्चय प्राण-घातक देखिपरा ताते अति अधीर ह्वै भागे अति आपत्काल में भागि कै प्राण बचावना यह राजनीति है यथा चाणक्ये—

"उपसर्गेऽन्यचक्रे च दुर्भिक्षे च भयावहे।
असाधुजनसंपर्के यः पलाति स जीवति॥"

सोई विचारि भागे इसी भाँति मैं भव ते भयातुर ताहूपर कराल कलियुग खाइ लेने चाहता है ताते अति अधीर है भागि शरण आया हौं हे रामचन्द्र सुयश प्रकाशक कृपारूप किरणिन करिकै मेरे शोक संताप दुःख संपूर्ण तापन को हरहु शरण राखहु॥ ३। २२॥

गच्छत लखि सम्पाति शपथ दै ठाढ़ कराई।
पूंछेउ कपिसों हेतु हाल तिन सकल सुनाई॥ १॥
तब पुनि कहि सम्पाति सिन्धु शतयोजन धारा।
तासु पार गढ़लंक बंक अति दुर्ग अपारा॥ २॥
रहती बिटप अशोकतर बहुबिधि करत कलापना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥ ३। २३॥

ईश्वरीकार्य करत में जब हानि लाभ मानापमान हर्ष विषादादि होते हैं तबै विघ्न लागते हैं इहां प्राणघात को शोच करने लागे ताते संपाति विघ्नरूप देखि परा अथवा ईश्वरीकार्य में रहे जो विघ्न भी आवत सोऊ सहायक ह्वै जाता है सो यह्व सहाय करैगा अथवा चंद्रमा मुनि के वचन ते रामदूतन को आगमन पूर्वही जानता रहा सो वानरन की वार्त्ता सुनि निश्चय जानि लिया परंतु समुद्र नांघना सबल राक्षसन के घर जाना है ताते वानरन के बल वीर्य धैर्य की परिक्षा लेने हेतु व्यंग्य वचन सत्यही कहा भाव इनके दर्शन को मैं बहुत दिन ते भूखा हौं आजु विधाता ने पठावा सो अब भली भाँति सबके दर्शन करौंगो गच्छत लखि वानरन को भागे जात देखि संपाति शपथ दै अर्थात् रघुनाथजी की सौगंद है मैं जटायु दशरथसखा का भाई संपाति हौं मैं तुमको खाउँगो नहीं ठाढ़ होहु इत्यादि कहि ठाढ़

कराइ पुनः कपिसों हेतु पूछेउ संपाति ने दूतन के आवने को कारण पूछेउ तब वानरों ने रामचरित यावत् भया रहै सो सब हाल कहि सुनाये जटायु को तिलांजलि दिया वाके पंख भी जामि आये १ जानकी जी के ढूंढ़नहार निश्चय जाने तब पुनः संपाति ने कही कि शत सौ योजन सिंधुधारा है अर्थात् चारि सै कोश समुद्र को फाट है तासु पार लंकागढ़ है सो बंक टेढ़ा अत्यंत अपार दुर्ग है अर्थात् राक्षसन की सेनासहित लोकविजयी रावण बसता है ताते जीतिकै पार जाना अत्यंत दुर्घट है २ त्यहि लंका बिषे अशोक वाटिका में अशोक वृक्षतर जानकीजी बैठी हैं बहु विधि कलापना विलापादि करती तथा महूं कलि राक्षस वश आरत हौं हे रामचंद्र कृपा करि मेरे दुःख संपूर्ण तापन को हरहु॥ ३ । २३॥

निरखि सिंधु कियो शोच कीश हहरे मन माहीं।
जामवन्त मन बूझि कहैं अंजनिसुत पाहीं॥ १॥
जाहु सिंधु के पार बेगि सिय सुधि लै आवहु।
करहु रामकर काज तिहूंपुर सुयश बढ़ावहु॥ २॥
सो सुनि पवनकुमार हर्ष भयो मन आपना।
कृपा करिय श्रीरामचंद्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।२४॥

सिंधु निरखि कीश मनमाहिं हहरे ताते शोच कियो अर्थात् सौ योजन पार जाना अगम जानि वानर सब हृदय में हारि मानि लिये ताते सब शोच करने लगे भाव विना पार गये कैसे खबरि पावैंगे तब जामवंत मन बूझि सिंधुपार जाय सब कार्य करिबे योग्य विचार करि मन में समुझि अंजनिसुत पाहीं हनुमानजी सों वचन कहे १ सिंधु के पार जाहु सियसुधि बेगि लै आवहु हे हनुमानजी सब कार्य

करिबे को तुमही समर्थ हौ ताते समुद्र के पार जाहु जानकीजी की खबरि लै कै शीघ्र ही लौटि आवहु इसभाँति रामकर काज करहु अरु तिहुँपुर सुयश बढ़ावहु सब सुकृतिन को सार हरिभक्तन को मुख्य व्यापार यही है ऐसा बिचारि हर्षसहित रघुनाथजी को कार्य करहु तामें प्रभु को तौ परम प्यारे होहु पुनः तीनिहूं लोक में तुम्हारा उत्तम यश प्रचार होइगो भाव रामकार्य्य हेतु तुम्हारा अवतार है अरु कौन ऐसा दुर्घट कार्य है जो तुम नहीं करिसक्के हौ २ जो जामवंत कहे सो वचन सुनि पवनकुमार हनुमान्जी अपने मनमें हर्ष आनंद बढ़ावत भयो हर्ष वीर रसकी स्थायी है अर्थात् औरनमें करुणा देखि वीरन के वीररस उद्दीपन होता है इहां सब कपिन में करुणा है जामवंत के वचन उद्दीपन विभाव है मुख अरुण होना अनुभाव है गर्व आमर्ष संचारी है उत्साह स्थायी है इति वीररस है यथा अंगदादि वानरन को करुणा भई हनुमान्जी सबको दुःख मिटाये तथा कालि कामादि की भय ते महूं दुःख ताप भरा हौं हे श्रीरामचंद्र भुवन में सुयश प्रकाशक कृपारूप किरणिन करिकै मेरे शोक संपूर्ण तापन को हरहु सुखद शरण में राखहु ॥ ३ । २४ ॥

पुलकि उठे हनुमान कान सुनि बचन रिछेशा।
चलत महाधुनि गर्जि डुलहि महि दिग्गज शेशा ॥ १ ॥
सुरसा बदन समाय सिंहिका बधत सिधाये।
प्रभुप्रताप जलयान पार सागर के आये ॥ २ ॥
मुष्टि हनत लंकिनि गिरी लंक सुमिरि प्रभु आपना।
कृपाकरियश्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥ ३।२५॥

ऋक्षेश वचन कान सुनि हनुमान् पुलकि उठे ऋक्षन के ईश राजा

जामवंत तिनके प्रचारपूर्वक वचन कानते सुनत ही वीरता की स्थायी उत्साह करिकै हनुमान्‌जी पुलकि उठे देह पर्वताकार भई रोमांच ह्वै आये चलत समय महा कठोर धुनि गर्जि कै फांदे तिन के वेगते महि जो पृथ्वी दिशा गज अरु शेष इत्यादि सब डोलि उठे १ सुरसा वदन पसारि बाधक भई लघुरूप धरि ताके मुख में पैठि नासिका द्वारा निसरि चले पुनः सिंहिका निशाचरी समुद्र में रहै सो माया करि छाया गहि लिया चलि न सकै ताहि बधत मारिकै आगे को सिधाये पुनः प्रभु को प्रतापरूप जलयान जहाज पर चढ़ि सागर समुद्र के पार लंका समीप आये २ गढ़ समीप पहुँचे पर लंकिनी बाधक भई सो मुष्टिक हनत गिरी अर्थात् वाके एक मूका मारे ताते रुधिर वमत विकल ह्वै भूमि पै गिरी पुनः आपना प्रभु श्रीरघुनाथजी को सुमिरतसंते लंकापुरी में प्रवेश किये कुशलपूर्वक लौटे तथा मह्वूं सुमिरत हौं हे श्रीरामचन्द्र कृपा करिकै मेरे शोक संतापन को हरहु ॥ ३ । २५ ॥

गृह गृह सोधत चले जोह सिय कतहुँ न पाये।
लगे उचारन रामनाम सुनि विभीषण आये ॥ १ ॥
संत मिले द्वउ मुदित हर्षि जिमि बासर कोका।
युक्ति बिभीषण बूझि गये जहँ बिटप अशोका ॥२॥
तरुपल्लव छपि कपि गुनै युक्ति होन प्रकटापना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।२६॥

गृह गृह शोधत लंका में घर घर ढूंढ़तसंते चले परन्तु सिय को जोह न पाये जानकीजी को कहीं न देखि पाये तब रामनामांकित हरि मंदिर देखि साधु वास जानि तहां रामनाम उच्चारण कीन्हे सो

बचन सुनत ही विभीषण उठि द्वारपर आय हाल पूछे १ विभीषण हनुमान् दोऊ संत हैं सजाती जानि मुदित मन ते आनन्द ह्वै कैसे हर्षि मिले यथा वासर भोर भये पर कोक चक्रवाक हर्षित होत पुनः विभीषण ते सब युक्ति बूझि पूछि कै जहां जानकी रहैं अशोक वृक्ष-तर तहां को हनुमान्‌जी गये २ तरु अशोकवृक्ष के सघन पल्लव में छपिकै बैठे पुनः कपि हनुमान्‌जी अपना को प्रकट होने की युक्ति गुनत अपने मन में बिचारत भाव कौन भाँति प्रसिद्ध ह्वै किशोरीजी सों वार्त्ता करी ऐसे ही महूं आपु की प्राप्ती चाहत हौं हे श्रीरामचन्द्र कृपा करिकै मेरे शोक संतापन को हरहु शरण में राखहु ॥ ३ । २६ ॥

त्यहि अवसर दशकंध नारि सँग आइ डरावा।
प्रभु प्रताप रबि निरखि आपु निजगेह सिधावा ॥ १ ॥
बिरहवंत ह्वै अनल मांगु तरु ते बैदेही।
शोकहरण मुद्रिका दीन्ह कपि अवसर तेही ॥ २ ॥
चीन्हि हर्ष विस्मित सिया दुखभंजन प्रभु आपना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना ॥ ३ । २७ ॥

जा समय हनुमान्‌जी अशोक वृक्ष में छिपे बैठे रहे त्यहि अवसर ताही समय में दशकन्ध नारि सँग मंदोदरी आदि स्त्रिन को साथ लिहे रावण आइ अनेक भाँति कुवचन कहि जानकीजी को डरवा-वता भया पुनः किशोरीजी के वचन सुनि प्रभु श्रीरघुनाथजी को प्रतापरूप रवि सूर्य निरखि अर्थात् –

सुनु दशमुख खद्योत प्रकाशा। कबहुँ कि नलिनी करै बिकाशा ॥

इस वाचक में लक्षणा करिकै रघुनाथजी सूर्य हैं रावण खद्योत भया इत्यादि वाक्यार्थ देखि हिये हारि मानि आपु निज गेह सिधावा

रावण आपही अपने घर को चला गया १ पुनः वैदेही विदेहपुत्री श्रीजानकीजी प्रभु के वियोग ते विरहवंत हैं ताहेतु तरु ते अनल मांगु अपने भस्म होने हेतु अशोक वृक्ष ते अग्नि मांगती हैं भाव तुम्हारा अशोक नाम है अग्नि दै मेरा दुःख हरौ तेहि अवसर कपि शोकहरण मुद्रिका दीन्ह जा समय किशोरीजी अग्नि मांगे तेही अवसर हनुमान्जी दुःख की हरणहारी मुद्रिका डारि दीन्हे २ अपना दुःखभंजन नशावनहार प्रभु की मुद्रिका चीन्हि सिया हर्ष विस्मित भई प्रभु की मुद्रिका पाइ खुशी भई पुनः इहां लै कौन आया यह विस्मय भई यथा किशोरी के हेतु हनुमान्जी को पठायो तथा हे रामचन्द्र कृपा करि मेरे शोक संताप हरौ ॥ ३ । २७ ॥

बरणि रामगुण करि प्रणाम बोले हनुमाना ।
हौं अनुचर तुवनाथ मातु मुद्री मैं आना ॥ १ ॥
निकट बोलि सुनि अमिय बयन पूछी कुशलाता ।
कहेउ कुशल दोउ बन्धु शोच कीजिय जनि माता ॥ २ ॥
कपिमुख रामसँदेश सुनि कहेउ सिया बिरहापना ।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना ॥ ३ । २८ ॥

जब जानकीजी विस्मय करने लगीं तब हनुमान्जी आदि ते रामचरित्र वर्णन करने लगे जब किशोरीजी ने बोलायो तब सन्मुख भये इति रामगुण बरणि पुनः आइ प्रणाम करि हाथ जोरि हनुमान्जी बोले हे मातु तुवनाथ अनुचर हौं आपके स्वामी श्रीरघुनाथजी तिनको सेवक मैं हौं अरु आप के पहिचानहेतु प्रभु के दीन्ह ते यह मुद्रिका मैं लाया हौं १ अमिय बैन सुनि निकट बोलि कुशलात पूछी अर्थात् प्रभु के वियोग दुःख ते मरणकाल समीप देखाता रहै ताही

समय हनुमान्जी आइ कहे कि मैं प्रभु के पठाये मुद्रिका लै कै आपके पास आया हौं इति जिआवनहारे अमृतरूप वचन सुनि प्रसन्न ह्वै कै हनुमान्जो को अपने निकट बोलाइ बैठाइ प्रभु की कुशल पूछती भईं भाव लषणलाल सहित प्रभु प्रसन्न हैं तब कहेउ हनुमान्जी हे माता दोऊ बन्धु लषणलाल सहित प्रभु कुशल हैं आप शोच जनि कीजिये भाव आपके बिषे प्रति दिन अधिक प्रेम बढ़ता जाता है २ कपि हनुमान्जी के मुख ते श्रीरघुनाथजी को सन्देश सुनि पुनः जानकीजी अपना विरह दुःख कहे ताही भाँति मैं अपना दुःख निवेदन करता हौं हे श्रीरामचन्द्र मम शोक मेरे दुःख सम्पूर्ण तापनादि को हरहु शरण में राखहु ॥ ३ । २८ ॥

सिय प्रबोध कृत लेन जोह समीर कुमारा ।
जाइ बाग फल खाइ तोरि तरु रक्षक मारा ॥ १ ॥
सुवनबद्ध सुनि बीसबाहु घननाद पठाये ।
लंकदहन लगि कीश तासु कर आप बँधाये ॥ २ ॥
दनुज बाँधि पट लाइ दव लूम कीश लखि तापना ।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।२६॥

सिय प्रबोधकृत हनुमान्जी अनेक धीर्यदायक वार्त्ता करि जानकीजी को प्रकर्ष करि बोध करि दीन्हे पुनः समीरकुमार हनुमान्जी लंकगढ़ को जोह लेन राक्षस भट कैसे बली वीर हैं इत्यादि जानिबे हेतु रावण की बाग में जाइ फल खाये पुनः तरु जो वृक्ष तिनको तोरिडारे रक्षक बाग के रखवारे जब मने करने लगे तब उनहूं को मारे पुनः रावण का पुत्र अक्षयकुमार आया ताको भी मारे १ सुवनबद्ध अपने पुत्र को मरण सुनि बीसबाहु जो रावण ताने क्रोध

करि घननाद मेघनाद को पठाया तासन कराल युद्ध भया परन्तु कीश लंकदहन लागि तासुकर आप बँधाये अर्थात् कीश वानर हनुमान् वाके बाँधे ते नहीं बँधिसक्ने हैं परन्तु लंका भस्म कीन चाहते हैं इस हेतु तासु के हाथ आपही बँधाय लिये २ पुनः राजसभा में लै गया तहां अनेक भाँति वार्त्ता करि जब दण्ड देनेको कहा तब विभीषण कहे कि नीतिरीति दूत को मारना न चाहिये और कछु दण्ड करौ तब रावण कहा कि वानर को पूंछ प्यारी होती है ताते याकी पूंछ फूँकि देउ सो सुनि दनुज राक्षस पट बाँधि दवलाइ पूंछ में बसन लपेटि अग्नि लगाय दीन्हे तब कीश लूम तापना लखि हनुमान्जी अपनी पूंछ बरत देखि पुर फूंकने को उद्यत भये जा भाँति निशाचरन के बीच आगि ते हनुमान्जी की रक्षा कीन्हेउ तथा मैं कलि कामादि के घेरे में परा शोकवन्ह तापन ते जरता हौं हे श्रीरामचन्द्र कृपा करिकै मेरे शोक सन्ताप हरहु ॥ ३ । २९ ॥

ज्वाला बरत कराल कीश चढ़ि कनक अटारी ।
नगर शोर चहुँ ओर डढ़न लागे नर नारी ॥ १ ॥
बातजात बलपुंज हाँक सुनि दनुज सकाने ।
बाल बृद्ध सम्पति बिहाय सब जरत पराने ॥ २ ॥
जरो लंक बच एक घर सु बिभीषण हरिजापना ।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना ॥३।३०॥

पूंछ बिषे अग्नि की कराल ज्वालाबरत देखि कीश वानर हनुमान्जी कनकमय मन्दिरन की अटारिन पर चढ़ि गये सर्वत्र अग्नि लगाइ दिये जब घर बरैलाग तब नगर लंका में चारिहू ओर शोर हल्ला मचा नर नारी डढ़न लागे स्त्री पुरुष पुरवासी सब जरै लागे १ वात-

जात पवन के पुत्र जो हनुमान्‌जी पुंजसमूह बल है जिनके तिनकी हांक सुनि दनुज सकाने राक्षस डरिगये भाव वानर बड़ा बली वीर है सबको मारि डारैगो इस भय ते जरत समय बाल वृद्ध संपत्ति विहाय पराने लरिका बूढ़े घरन की ऐश्वर्य वस्तु इत्यादि त्यागि आप जी लै सब भागे भाव किसी को धीर्य न रहा काहेते जे सन्मुख भये तिनको मारि घायल बरत अग्नि में डारि दिये ताते सब सकाने २ लंका नगर समग्र जरिगया हरिनाम जपनेवाले विभीषण को एक घर बचा सुन्दर बना रहा तापर यथा रक्षा राखेउ तथा हे श्रीरामचन्द्र कृपा करिकै मेरेहू शोक कलिकृत दुःख संताप हरहु ॥ ३ । ३० ॥

श्रम निवारि पुर जारि सिंधु महँ लूम बुताई ।
आइ सिया पदपद्म बंदि कपि मांगु रजाई ॥ १ ॥
सहिदानी कछु देहु मातु सुधि प्रभुहि जनावो ।
चूड़ामणि दै कहेउ तात बहु बिनय सुनावो ॥ २ ॥
कहयो मोर संदेश नाथ सों शरण लाज रखु आपना ।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना ॥ ३ । ३१ ॥

पुर लंका को जारि भस्म करि पुनः लूम जो पूंछ बसन तैलयुत जो अग्नि बरिरही है ताको सिंधु के जल में बोरि बुताय पुनः श्रम निवारि सहिताइकै अशोक वृक्षतर आइ सिय पदपद्म बंदि श्री-जानकीजी के पदकमलों को प्रणाम करि तब कपि रजाइ मांगु हनुमान्-जी प्रभुपास जाने की आज्ञा मांगे १ क्या रजाइ मांगे हे मातु जानकीजी यथा प्रभु मुद्रिका दिये तथा आपहू कछु सहिदानी अपना कछु चिह्न देहु जाको देखाय आपुकी सुधि खबरि जाइ प्रभुहि

रघुनाथजी को जनावौं हनुमान्‌जी के वचन सुनि चूड़ामणि उतारि कै दीन्हे पुनः जानकीजी बोलीं हे तात तुमसों मैं बहुत का कहौं मेरी दिशि ते बहुत भाँति की विनय प्रभु सों सुनावो जाइ भाव जामें शीघ्रही आवैं २ हे कपि मोर संदेश नाथ सों कहेउ कि अपनी शरण की लाज राखौ भाव शरणपाल प्रभु हैं तातें मेरा दुःख शीघ्र ही निवारण करैं तथा महूं प्रार्थना करता हौं हे श्रीरामचन्द्र मेरे शोक संताप को हरहु ॥ ३। ३१ ॥

बिबिध भाँति दै धीर मातुपद बंदि कपीशा।
चले शुभ आशिष पाइ आइ भेंटे सब कीशा ॥ १ ॥
चूमि चरण कर कीश रीछ पूछी कुशलाई।
कहत कथा बहु भाँति जाइ मधुबन फल खाई ॥ २ ॥
बंदि रामपदकंज कहि सीतासुधि इतिहासना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।३२॥

यावत् खबरि नहीं पाये तावत् विलंब रही अब खबरि पावत तुरत ही प्रभु आवैंगे मन थिर राखहु इत्यादि विविध अनेक भाँति के वचन कहि किशोरीजी को धीरज दैकै पुनः मातु जानकी के पांयन को वंदना करि शुभ आशिष मंगलमय आशीर्वाद पाय कै कपि हनुमान्‌जी चले समुद्र के इस पार आइ सब कीश अंगदादिकन को भेंटे १ हनुमान्‌जी के चरण तथा कर हाथ तिनको सब कीश वानर चूमि लीन्हे भाव इनहीं हाथ पैरों ते प्रभु को कार्य करि आये अरु हमलोगन के प्राण राखे इति विचारि चूमे अरु रीछ जामवंत कुशलात कुशल क्षेम सहित सब हाल पूछे भाव जानकीजी कौन आचरण ते हैं तुमने भेंट कौन भाँति ते भई राक्षसन सों कैसे कुशल बचि आये इत्यादि

को उत्तर सुरसा सिंहिका लंकिनी की बाधा विभीषण की भेंट किशोरीजी सों भेंट बागउजारन लंकादाह इत्यादि बहुत भाँति की कथा कहतसंते किष्किंधा में पहुँचि प्रथम जाइ मधुवन के फल खाये भाव इसी द्वारा खबरि खुशी को हाल प्रसिद्ध करि दीन्हे २ पुनः सुग्रीव समेत सब जाइ रामपदकंज बंदि श्रीरघुनाथजी के पदकमलों को प्रणाम करि पुनः सीतासुधि जानकीजीकी खबरि के सब इतिहास कहे अर्थात् लंका में रावण के वश महादुःख में हैं तैसेही मेरी प्रार्थना है हे श्रीरामचंद्र भुवन में अमलयश प्रकाशक कृपारूप किरणिन करिकै मेरे दुःख संपूर्ण तापन को हरहु सुखद शरण राखहु॥ ३। ३२॥

बिरहअनल तन तपत आपु हित राखत नयना।
अब बिलम्ब जनि करहु सियाहित राजिव नयना॥१॥
शक्रसुवन मृगहेम जान प्रभु बाणप्रतापा।
जान कबंधरु बालि कहा भये सो शर चापा॥ २॥
सीय बिनय करि चरण परि चूड़ामणि दै आपना।
कृपा करिय श्रीरामचंद्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।३३॥

जो किशोरीजी कहिदिया है कि मेरी बहुत भाँति ते विनय बिनती सुनायो सोई हनुमान्‌जी प्रभु सों कहत विरहअनल तन तपत हे प्रभु किशोरी जी को तन विरह अग्नि करिकै ऐसा तप्त रहै कि भस्म है जाता परन्तु आपुके दर्शन हित नयन राखि छांड़ते हैं अर्थात् विरहाग्नि प्रचंड होते देखि आंशु जल गिराइ बुझाइ देते हैं हे राजिवनयन कृपारस भरे कमलनयन सिय हित जानकीजी के आनिवे हेतु में अब विलंब जनि करहु भाव शीघ्रही चलिये १ पुनः हे प्रभु

किशोरीजी की बिनती सुनिये यह कहा है कि शक्रसुवन इंद्र को पुत्र जयंत तथा हेम कंचन मृग मारीच ये दोऊ प्रभु के बाण को प्रताप जानते हैं अर्थात् जयंत पर तौ सींक को बाण चलाये तासों बचिबो अगम देखिपरा तथा यज्ञरक्षा समय विना फर को बाण मारीच के मारे सो उहां को उड़ा आइ सिंधुके इसपार गिरा इसहेतु जानते हैं पुनः कबंध राक्षस बाण को प्रताप जानता है तथा बालि-महाबली सो भी जानता है भाव एक ही बाण ते प्राण हरे सो शर चाप कहा भयो सोई धनुष बाण प्रभु के अब क्या ह्वै गये जो दासी ह्वै मैं राक्षस के बन्धन में परी हौं अरु प्रभु नहीं खबरि लेते हैं तातें शरणपाल बाना को सँभार करि मेरे संकट को शीघ्रही हरैं २ हे प्रभु आपके चरण परि सिय श्रीजानकीजी अनेक भाँति विनय कियो है पुनः सहिदानी हित अपनी चूड़ामणि दीन्ही है सो लीजिये अरु अब प्रभु शीघ्र कृपा करि चलिये इसीभांति कलिकामादि के वश परा दुखित आपके वियोग ते तीनिहु तापन करिकै तप्त हौं इस हेतु महूँ बिनती करता हौं हे श्रीरामचंद्र अमल यश भुवन में प्रकाशक दयारूप अमृतमय करुणारूप शीतलतायुत कृपारूप किरणिन करिकै मेरे शोक दुःख तथा संपूर्ण तापन को हरहु ॥ ३। ३३ ॥

सीय बिनय सुनि सियानाथ कर गहि धनु तीरा।
उतरे कटक समूह संग लै सागर तीरा ॥ १ ॥
मिला बिभीषण आइ पाहि कहि जय अवधेशा ॥
प्रणतपाल करि अभय तासु पुनि कहि लंकेशा ॥ २ ॥
ता दिन सिंधु बँधाय पुनि करत शंभुसंस्थापना।
कृपा करिय श्रीरामचंद्र मम हरहु शोकसंतापना ॥३।३४॥

सिय विनय हनुमान्‌जी के मुख ते श्रीजानकीजी की बिनती सुनि सियनाथ श्रीरघुनाथजी धनुतीर कर गहि धनुष बाण हाथन में धारण करि वानर ऋक्षन की सेना साथ ले चले इति कटक समूह सेना बड़ीभारी संग लै चलिकै जाय सागर समुद्र के तीर उतरे वास कीन्हे भाव बीच में वास नहीं कीन्हे १ जय अवधेश पाहि कहि विभीषण आइ मिला अयोध्या के ईश महाराज रघुनाथजी की जय होय आप प्रणतपाल हौ ऐसा सुयश सुनि रावण ते भयभीत मैं शरण आया हौं पाहि मेरी रक्षा करौ ऐसा वचन कहि विभीषण आइ प्रभु को मिला प्रणतपाल प्रणत जो नम्रतापूर्वक प्रणाम करने-वाले तिनको पालनहार श्रीरघुनाथजी अभय करि शरण में राखि सब भय मिटाय दिये पुनि तासु विभीषण को लंकेश कहि अर्थात् लंका की राज्य को तिलककरि लंकनायक नाम कहि कुशल प्रश्न पूँछे २ ता दिन सिन्धु बँधाय अर्थात् सबसों मन्त्र पूँछि सिन्धु ते राह माँगे जब उत्तर न दिया तब क्रोध करने पर आइ सेतु बाँधने को कहा ताते नल नील के हाथ पहारन ते समुद्र में सेतु बँधाय पुनः शम्भु महादेवजी को स्थापना कीन्हे यथा रावण ते भयातुर विभीषण को शरण राखि अभय कीन्हेउ तथा कलि कामादि ते भया-तुर महूँ शरण आया हौं हे श्रीरामचन्द्र अमल यश भुवन में प्रकाशक कृपारूप किरणिन करिकै मेरे शोक सम्पूर्ण तापन को हरहु अभय करिकै सुखद शरण में राखहु ॥ ३ । ३४ ॥

रामेश्वर सुख धाम राम कहि श्रीमुख बानी ।
जासु नाम उच्चरत परम गति पावहिं प्रानी ॥ १ ॥
गिरिजारमन कृपाल दीनहित अवढर दानी ।
जन पर होहिं दयाल शंभु सब बिधि गुणखानी ॥ २ ॥

उमारमन तन दुख दमन करो दास निज आपना।
कृपाकरिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना ॥३।३५॥

सुखधाम राम श्रीमुख वाणी ते रामेश्वर कहि अर्थात् सिंधु के इसी पार सेतु पर मंदिर निर्माण कराय शिवजी को स्थापित करि पुनः सुख के भरे मंदिर श्रीरघुनाथजी अपने ही मुख ते देववाणी में समासयुत रामेश्वर ऐसा शिव को नाम कहे रामेश्वर नाम में कौन समास ते क्या अर्थ होता है प्रथम कर्मकांड ते तत्पुरुष समास यथा " रामस्य ईश्वरः रामेश्वरः " अर्थात् राम के जे ईश्वर तिनका कही रामेश्वर भाव माधुर्य में रघुनाथजी इष्ट मानि स्थापित करि पूजे ताते इनको पूजे वांछित फल प्राप्त होइगो पुनः ज्ञानकाण्ड ते कर्मधारय समास यथा " यः रामः सः ईश्वरः शिवः रामेश्वरः " अर्थात् जो राम ईश्वर सोई शिव ईश्वर ताते कही रामेश्वर भाव अभेद मानि दर्शन पूजन करि मुक्ति माँगिये पुनः उपासनाकांड ते बहुब्रीहि समास यथा " रामो ईश्वरः यस्यासौ रामेश्वरः " अर्थात् राम हैं ईश्वर जाके ताको कही रामेश्वर भाव ऐश्वर्य में परात्पर रामरूप इष्ट हैं जिनके ऐसे परमभक्त शिव को सेवन करि रामभक्ति माँगिये कैसे शिव हैं जासु नाम उच्चरत " ॐ नमः शिवाय " ऐसा जाको नाम उच्चारण करतसंते प्राणी शुभ गति कैलास में वास पावते हैं अथवा काशीजी में मरत समय जाके मुख ते रामनाम उच्चरत भाव शिवजी कान में सुनाय देते हैं ताते सब प्राणी परम-गति मुक्ति पावते हैं १ गिरिजारमन कृपाल गिरि पर्वत स्वाभाविक परस्वार्थी होते हैं ताकी जो पुत्री पार्वती अत्यन्त परोपकारी हैं तिनके रमन प्राण प्यारे पति ताते कृपाल कृपागुण भरे मंदिर अर्थात् भूतमात्र की रक्षा करिबे को आपही को समर्थ माने हैं पुनः दीन-

हित दीन जे पौरुष हीन तिनको हित करते हैं पुनः अवढर जापर कोई नहीं ढरता है तिनके दानी दान देनहारे हैं पुनः अपने जनपर दयाल दया भरे मंदिर अर्थात् बिन स्वार्थ ही दुःख हरिलेते हैं इत्यादि सब विधि ते शंभु उत्तम गुणन के खानि हैं २ हे उमारमन पार्वतीनाथ तन दुखदमन व्याधि शूल बंधन दरिद्रता वियोग हानि भयादि यावत् देह के दुःख हैं तिनको नाशकर्त्ता हौ निज अपना दास करो अर्थात् रामभक्त हौ भक्तन की सेवा किहे रामभक्ति प्राप्त होती सो दास जानि दीजिये हे श्रीरामचन्द्र कृपा करि मेरे शोक संतापन को हरौ ३ । ३५ ॥

जलनिधि उतरेउ पार भालु कपि कटक समेता ।
पठै बसीठी बूझि मरम गढ़ उठेउ सचेता ॥ १ ॥
चारि यूथ ह्वै लगे बीर सब सुभट जुझारे ।
प्रभुप्रताप करि दाप ऋक्ष कपि कटक सँहारे ॥ २ ॥
कंप अकंपन आदि हति कहि कपि जय नाथ आपना ।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।३६॥

भालु जो ऋक्ष कपि जो वानर तिनकी कटक सेना समेत प्रभु सेतु पर चले जलनिधि जो समुद्र ताके उसपार जाइ उतरे सुवेल पर डेरा कीन्हे पुनः बसीठी पठै गढ़ को मर्म बूझि अर्थात् अंगद को बसीठी रावण ते साम की बातैं करिबे हेतु लंका को पठाये उहां जाइ अनेक वार्त्ता करि जानि लिये कि रावण किसी भाँति न मिलैगो इत्यादि मर्म लंकागढ़ को सब हाल बूझि समझिकै सचेत वीरता धारण करि वानर ऋक्ष भट उठे चले १ वीर जे मुखिया सरदार हैं पुनः यूथपति सेनादि यावत् जुझारे युद्ध करिबे योग्य

सुभट हैं ते चारियूथ ह्वै लगे लंका घेरे अर्थात् सेना सहित नील पूर्वद्वार लगे उधर प्रहस्त आया तथा अंगद दक्षिण द्वार लगे तहां उधर महोदर आया हनुमान् पश्चिमद्वार लगे उधर मेघनाद आया उत्तर रघुनाथजी उधर रावण इत्यादि यथा वाल्मीकीये।

"पूर्वद्वारं तु लंकाया नीलो वानरपुंगवः।
प्रहस्तं प्रतियोद्धा स्याद्वानरैर्बहुभिर्वृतः॥
अंगदो बालिपुत्रस्तु बलेन महतावृतः।
दक्षिणे बाधतां द्वारे महापार्श्वमहोदरौ॥
हनुमान्पश्चिमद्वारं निष्पीड्य पवनात्मजः।
उत्तरं नगरद्वारमहं सौमित्रिणा सह॥"

इत्यादि लंका चारिहू दिशि ते घेरे युद्ध होने लगा इधर कपि वानर तथा ऋक्ष प्रभु प्रताप दाप करि श्रीरघुनाथजी के प्रताप ते अभिमान करि कटक सँहारे राक्षसन की सेना बहुत मारे २ कंपन अकंपनादि बहुते वीरन को हति मारि कै अपने नाथ रघुनाथजी की जय जयकार कपि वानर कहि रहे हैं इसी भाँति विवेक विरागादिकन को सबल करि कामादि को परास्त करिकै हे श्रीरामचन्द्र कृपाकरि मेरे शोक संतापन को हरहु॥ ३। ३६॥

समहोदर अतिकाय आदि भट हनि हनुमंता।
हाँकि समर महँ मेघनाद कहँ हत्यो अनंता॥ १॥
महिरावण बध कियो रामसेवक सुखदाई।
दलपाछे करि सौंह तूण कटि कसि द्वउ भाई॥ २॥
कृपादृष्टि करि बिपुल बल नाथ दियो दल आपना।
कृपाकरिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।३७॥

सहित महोदर अतिकाय आदि बहुते भट योधन को हनुमानजी हति मारिडारे तथा समरमहँ हाँकि रणभूमि सन्मुख ललकारिकै अनंत जो लक्ष्मणजी सो मेघनाद कहँ हत्यो मारे १ रामसेवकन को सुख देनेहारे जो हनुमानजी सो पाताल में जाइ महिरावण को बध कियो यह रावण को पुत्र है तूण तरकस कटि में कसि धनु बाण हाथन में गहि दोऊ भाई लषणलाल सहित श्रीरघुनाथजी दल वानरी सेना अपने पाछे करि सौंह शत्रुन के सन्मुख चले २ नाथ रघुनाथजी कृपादृष्टि करि अपना दल जो वानर ऋक्षादि तिनको विपुल बहुत बल दै दिये इसी भाँति हे श्रीरामचन्द्र कृपादृष्टि करि विवेक विरागादि बल दै कलि शत्रु के सन्मुख ह्वै रक्षा करिकै मेरे दुःख संपूर्ण तापन को हरहु ॥ ३ । ३७ ॥

कुंभकरण अति बिकटरूप आवा रण माहीं।
दिये पटकि कपि भालु समर मरदेउ महि माहीं ॥१॥
उठि बहोरि त्यहि अस्त्र शस्त्र छांड़े कपिदल पर।
दल पाछे करि धनुष लीन्ह निज कर सीताबर ॥२॥
बध्यो पाणि निज ताहि प्रभु देव मुदित करि जापना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।३८॥

अति विकट अत्यंत कठिन कराल महाबली भारी रूप है जाको ऐसा कुंभकर्ण रणमाहीं रणभूमि में निशंक सन्मुख आवा इधर ते भी बलीवीर धाये युद्ध में बहुते बानर ऋक्षन को पटकि दिया पुनः सोऊ समरमहि मरदेउ रणभूमि में दलित भयो अर्थात् हनुमानजी मूका मारे ताते मूर्च्छित ह्वै भूमि पै गिरिपरा १ बहोरि चेतसँभारि कुंभकर्ण उठा कपिदल पर त्यहि अस्त्र बाण त्रिशूल शक्ति आदि शस्त्र

गदा कृपाणादि डारा त्यहि कुम्भकर्ण ने अनेक हथियार वृक्ष पर्वतादि वानरी सेनापर चलाया शत्रु को सबल वीर जानि भाव कुंभकर्ण किसी को मारा न मरी ऐसा बिचारि वानर ऋक्षन को दल अपने पाछे करि सीतावर श्रीरघुनाथजी निजकर अपने हाथ धनुष बाण लै कुंभकर्ण ते युद्ध करने लगे २ प्रभु निजपाणि ताहि बध्यो श्रीरघुनाथजी अपने हाथ त्यहि कुम्भकर्ण को मारे सो देखि देवता जय जयकार जाप करने लगे यथा कृपा करि देवन को सुखी कीन्हेउ तथा हे श्रीरामचंद्र कृपा करि मेरे शोकसंतापना दुःख सब तापन को हरहु॥ ३। ३८॥

रावण सन्मुख आइ भ्रात पर शूल चलावत।
दल पाछे करि सौंह ताहि प्रभु आपु खेलावत॥१॥
कहत देव अब जनि बिलंब करु दुष्टहि मारहु।
त्रिभुवन बिजय समेत नाथ निज पुर पग धारहु॥२॥
सुनि पुकार रावण हत्यो राज बिभीषण थापना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।३९॥

रावण रण में निःशंक सन्मुख चला आवा वानरन ते युद्ध भया पुनः भ्रात प्रभु के भाई अर्थात् पुत्रघाती जानि लक्ष्मणजी पर शूल शक्ति आदि चलावा अथवा अपना भाई लंका को भेद देनेवाला जानि विभीषण पर शूल चलावा ताते विभीषण सहित वानर ऋक्षन को दल अपने पाछे करि ताहि सौंह त्यहि रावण के सन्मुख प्रभु आप खेलावत रघुनाथजी साधारण युद्ध कीन कीन्हे १ साधारण युद्ध करते देखि देवता कहत है प्रभु याके मारिबे में विलंब जनि करहु दुष्ट रावणहि शीघ्रही मारहु यह तीनिहूं लोकन को दुःख-दायक है ताते रावण को मारि त्रिभुवन विजय समेत भात्र तीनिहूं

लोकन में आपुकी जय जयकार होयगी इस प्रशंसा सहित हे रघु-नाथजी निज पुर पग धारहु अयोध्याजी को चलहु भरतादि पुर-वासी दुःखित हैं तिनको आनन्द देहु २ देवतन की पुकार सुनि रघुनाथजी रावण को हत्यो मार्‌यो पुनः लंका की राज पर विभी-षण को थापना राजसिंहासन पर बैठाइ राज्याभिषेक कराये इसी भाँति हे श्रीरामचंद्र कृपा करिकै मेरे दुःख तापन को हरहु ॥३।३९॥

रामसखा हनुमान अंगद गये सीयल्यवाई ।
निशिचर दौरे सखा सपदि लै प्रभु पहँ आई ॥ १ ॥
शोभित जानकि राम संग कपिदल हरषाई ।
जयति देव उच्चरत सुयश मुनि साधुन गाई ॥ २ ॥
ब्रह्मादिक अस्तुति करत छबि निहारि नाथापना ।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।४०॥

राघुनाथजी के सखा विभीषण तथा हनुमान् अंगद इत्यादि जानकीजी को ल्यवाइ ल्याइबे हेतु सब लंका को गये तथा निशा-चर भी दौरे साथ भये पुनः सखा विभीषण राक्षसिन को आज्ञा दीन्हे ते उपटन लगाय मज्जन कराय दिव्य भूषण बसन पहिराये पुनः सुन्दरे शिबिका पर सवार कराय लै चले सपदि प्रभु पहँ आई शीघ्र ही जानकीजी रघुनाथजी के पास आईं १ जब श्रीजानकी जी श्रीरघुनाथजी के संग वामभाग एक आसन पर शोभित भईं तब कपिदल हरषाइ युगलरूप एकत्र देखि श्रम को फल सिद्ध पाइ वान-रन की सेना परम आनंद भई देवता जय जयकार शब्द वारंवार उच्चारण करते हैं पुनः मुनि साधुजन प्रभु को सुंदर यश गान करते हैं २ अपने नाथ श्रीरघुनाथजी की छवि स्वरूपता सुंदरता माधुरी

अवलोकन करि ब्रह्मा शिव इंद्रादि देवता सब स्तुति करने लगे यथा कृपा करि देवन को अभय कीन्हेउ तथा हे श्रीरामचंद्र अमलयश प्रकाशक कृपा करिकै मेरे दुःख तापन को हरहु शरण राखि कामादि ते अभय करहु ॥ ३ । ४० ॥

ह्वै पुष्पक आरूढ़ राम सिय लषण समेता।
चले अवध लै सखा संग प्रभु कृपानिकेता ॥ १ ॥
आये तीरथराज भेजि हनुमान भरत पहँ।
बातजात सानंद जात प्रभुभ्रात दर्शकहँ ॥ २ ॥
भरत मगन बारिद बिरह राम देहु दरशापना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥३।४१॥

सिय लषण समेत राम पुष्पक आरूढ़ ह्वै अर्थात् प्रभु विभीषण ते कहे कि ऐसा उपाय करु जामें हम शीघ्रही अयोध्याजी में पहुँचैं तब विभीषण मणि वसन भरि पुष्पक विमान लाये वसन मणि तौ वानरन को दै बिदा कीन्हे पुनः श्रीजानकीजी लक्ष्मणजी सहित श्रीरघुनाथजी पुष्पक विमान पर सवार भये पुनः विभीषण सुग्रीव हनुमान् अंगद जामवन्त नल नीलादि सखन को संग लै प्रभु कृपानिकेत कृपागुण भरे मंदिर प्रभु अयोध्याजी को चले १ शीघ्र विमान चलतसंते प्रभु तीर्थराज प्रयागजी को आये भरद्वाज के आश्रम में उतरे पुनः हनुमान्जी को अयोध्याजी को भरत के पास खबरि देने हेतु भेजे भाव हमारे आगमन की खबरि सुनाय भरत की कुशल लै तुम शीघ्रही लौटि आयो इति प्रभु की आज्ञा पाय बातजात सानंद बात पवन ताके जात पुत्र पवनपुत्र हनुमान्जी आनंद सहित प्रभुभ्रात दर्श कहँ जात प्रभु के भ्राता भाई भरतजी तिनके दर्शन हेतु जाते हैं २ इहां रघुनाथजी की विरहवारिधि भरतमगन विरह-

रूप समुद्र में भरत बूड़ते हैं किस हेतु हे रघुनाथजी अपने दर्शन शीघ्रही दीजिये तथा मेरी प्रार्थना है हे श्रीरामचंद्र कृपा करिकै मेरे शोक संतापन को हरहु शरण राखहु ॥ ३।४१॥

हनूमान जलयान भेंटि है जलनिधि पारा।
कहेउ कुशल लै समाचार तब पवनकुमारा ॥ १॥
भरत आइ गुरु सचिव मातु पुरलोग जनाई।
पुलकि उठे सब स्वाति बुंद जनु चातक पाई ॥ २॥
गंग पूजि सिय राम चलि पाइ अनुज कुशलापना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक सन्तापना॥३।४२॥

हनूमान् जलयान जहाज है भरतजी को भेंटे जलनिधि विरहरूप समुद्र में जो बूड़ते रहैं त्यहिते पार कीन्हे कौन भाँति प्रभु की कुशल अरु आगमन कहि सब दुःख दूरि करि आनंद करि पुनः समाचार कुशलादि भरतादि पुर को सब हाल जानि लैकै तब पवन-कुमार हनुमान्जी प्रभु के पास लौटि जाय भरतजी की कुशल कहे १ इहां हर्षसहित भरतजी नंदीग्राम ते उठि अयोध्याजी को गये तहां आइ गुरु वशिष्ठजी सचिव सुमन्तादि पुनः मातु कौशल्यादि तथा पुरलोग अयोध्यावासी सब स्त्री पुरुष इत्यादि सबको जनाइ भाव सकुल रावण को मारि देवन को अभय करि श्रीजानकी लषण स-हित श्रीरघुनाथजी आनंद सहित आवते हैं इत्यादि हाल सुनतही प्रेमानन्द उमँगते सब कैसे पुलकि उठे देह में रोमांच उठि आयो जनु प्यासी चातक स्वातीनक्षत्र में मेघ वर्षा के बुंद पाइ अर्थात् सब अनन्य रामानुरागी वियोग ते दर्श प्यास ते दुःखी रहे चौदह वर्ष की जो अवधि अन्तदिन सोई स्वाती है तामें प्रभु को आगमन वचन सोई बुंद हैं भरत मेघ द्वारा पाइ आनन्द भये सब मंगलसाज सजने

लगे भरतजी मंगलसाज सहित वशिष्ठादि विप्र पुरवासी जनसाहित प्रभु की भेंट हित आगे चले २ इहां गंग पूजि सिय अर्थात् प्रथम मानि गई रहैं सो कुशलपूर्वक आईं ताते विधिवत् गंगाजी की पूजन कीन्हीं जानकीजी पुनः अपने अनुज छोटे भाई जो भरत तिनकी कुशल पाइ समाज सहित रघुनाथजी अयोध्याजी को चले तथा हे श्रीरामचंद्र कृपा करिकै मेरे शोक संताप हरहु ॥ ३ । ४२ ॥

उतरि यान ते पुरसमीप भेंटे गुरु मुनिजन।
भरत चरण हियलाय बहुरि भेंटे रिपुसूदन ॥ १ ॥
भरत लषण सानन्द भेंटि सानुज द्वौ भाई।
हुँकरि गाइ दिनअन्त धाइ जनु बच्छ लवाई ॥ २ ॥
मिलि परिजन सानंद सिय राम चले भवनापना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसन्तापना ॥ ३ । ४३ ॥

पुर समीप यान ते उतरि अर्थात् वशिष्ठादि गुरुजन सहित भरत को आवत देखि अयोध्याजी के समीप श्रीरघुनाथजी पुष्पक विमान ते उतरे प्रथम गुरु वशिष्ठ को प्रणाम करि मिले पुनः वामदेवादि अपर मुनिजनन को प्रणाम करि मिले पुनः भरतजी प्रणाम करि प्रभु के चरण गहे तिनको उठाय लिये हिय छाती में लगाय मिलि कुशल पूंछि पुनः रिपुसूदन शत्रुहन को प्रणाम करते देखि उठाय उर में लगाय प्रभु भेंटे १ पुनः भरत सानुज दोऊ भाई सानंद लषण भेंटि अर्थात् लक्ष्मणजी प्रणाम कीन्हे तिनको शुद्ध रामानुरागी जानि आनन्द सहित उठाय हृदय में लगाय भरतजी भेंटे पुनः सानुज दोऊ भाई अर्थात् अनुज जो शत्रुहन तिन प्रणाम कीन्हे तिनको हृदय में लगाय लक्ष्मणजी मिले इति अनुज सहित भरत दोऊ भाई सानंद सहित लक्ष्मणजी को भेंटे दिन अंत सांझ भये पर यथा लवाइ थोरे

दिनके बच्छ हेतु हुंकारि जनु गाइ धाई इसी भाँति प्रभु के भेंटबे हेतु कौशल्यादि माता धाईं इति शेषः २ परिजन प्रजा परिवारादि सब जनन को मिलि सानंद सिय राम अपने भवन चले सबको भेंटि जनकनंदिनी रघुनंदन अपने घर को चले यथा पुरवासिन को दुःख हर्यो तथा हे श्रीरामचन्द्र कृपा करिकै मेरे शोक संतापन को हरहु॥३।४३॥

गुरु अनुशासन सचिव साज अभिषेक बनाई।
राम सिंहासन राज दीन्ह गुरुद्विज समुदाई॥१॥
सखा भरत गहि चमर छत्र सिय राम निहारी।
मुदित जन्मफल पाइ मातु आरती उतारी॥२॥
बेद स्तुति करि जयति भनि भक्ति देहु प्रभु आपना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।४४॥

गुरु अनुशासन वशिष्ठजी की आज्ञा पाय सचिव सुमंतादि सब मंगल साज साजि अभिषेक योग्य सब ऐश्वर्य बनाय तैयार कीन्हे पुनः भूषण वसन साजि जनकनंदिनी समेत श्रीरघुनाथजी राज-सिंहासन पर आसीन भये द्विज समुदाई ब्राह्मण बहुतन समेत गुरु वशिष्ठजी राज दीन्ह अर्थात् प्रथम वशिष्ठजी तिलक कीन्हे पुनः सब विप्रन तिलक कीन्हे १ ता समय सुग्रीवादि सखा भरतादि अनुज चमर छत्र व्यजनादि सेवा साज गहे हाथन में लीन्हे सब दिशि खड़े हैं इसभाँति सिय राम निहारी अर्थात् दक्षिण दिशि भरत चमर लिहे नैर्ऋत्य विभीषण प्रभु को धनुष लिहे पश्चिम लक्ष्मणजी छत्र लिहे वायव्य में अंगद प्रभु की खड्ग लिहे उत्तर शत्रुहन व्यजन लिहे ईशान में जामवंत तरकस लिहे पूर्व हनुमान् शक्ति लिहे आग्नेय सुग्रीव ढाल लिहे इत्यादि अनुज सखन सहित राजसिंहासन पर

जनकनंदिनी सहित रघुनंदन को निहारि नेत्रन भरि शोभा निरखि जन्म धरे को फल पाय मुदित आनन्द मन ते कौशल्यादि माता आरती उतारती हैं २ ता समय में प्रथम चारिहू बेदन स्तुति करि जयति भनि वारंवार जय जयकार करते हैं पुनः मांगे हे प्रभु अपनी भक्ति देहु पुनः बिदा भये यथा सबको आनन्द दीन्हेउ तथा हे श्रीरामचन्द्र भुवन में अमल यश प्रकाशक दयारूप अमृतमय करुणा शीतलता सहित कृपारूप किरणिन करिकै मेरे शोक दुःख सम्पूर्ण प्रकार की तापन को हरहु ॥ ३ । ४४ ॥

छुठे बंदि सब बिबुध कोटि तेंतीस हर्षिकै ।
अस्तुति करत बनाय पुहुप जयमाल बर्षिकै ॥ १ ॥
शंभु आदि कृत बिबिध भाँति अस्तुति सिय रामा ।
चले रजायसु पाय देव सब निज निज धामा ॥ २ ॥
बिदा कीन्ह सब सखनि प्रभु भजहु जाय भवनापना ।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥ ३ ।४५ ॥

तेंतीस कोटि विबुध जो देवता तिनकी बंदि छूटी अर्थात् रावण के मरे ते स्वतंत्र भये ताते हर्षिकै पुहुप जो फूल तिनको माला बनाय सो प्रभु पर बर्षि पुनः जय जयकार करि स्तुति करते हैं अथवा स्तुति करत अरु फूलन को जयमाला बनाय प्रभु पर बर्षते हैं १ पुनः ब्रह्मा इन्द्र शंभु आदि श्रीजनकनंदिनी सहित रघुनाथजी की विविध भाँति स्तुतिकृत अनेक भाँति ते स्तुति करते हैं पुनः रजायसु प्रभु की आज्ञा पाय अभय ह्वै देवता सब इंद्रादि निज निज धाम अपने अपने लोकन को आनंद ते चले २ पुनः प्रभु सुग्रीवादि सब सखन को बिदा कीन्ह पुनः आज्ञा दीन्हे कि अपने भवन घर में वास करि हमको भजहु जाय तुम्हारा स्वाभाविक ही कल्याण है

इसी भाँति हे श्रीरामचन्द्र कृपा करिकै मेरे शोक दुःख संपूर्ण तापन को हरहु शरण राखहु ॥ ३ । ४५ ॥

रामचरित अवगाह सिंधु कउ पार न पावै।
शेष शारदा निगम नेति कहि निज मुख गावै ॥ १ ॥
शंभु उमा सों कही भरद्वाज सों याज्ञवल्क्य मुनि।
काकभुशुंडि सों गरुड़ सुनी तुलसी मानस गुनि ॥ २ ॥
कहत सुनत रति रामपद होत सदा उर आपना।
कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना॥३।४६॥

इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतछप्पयरामायणं समाप्तम्।

रामचरित सिंधु अवगाह श्रीरामरूप नाम लीला धाम गुणादि वर्णन जो रघुनाथजी को चरितरूप समुद्र है सो अवगाह अथाह है अर्थात् किसी लीला को हेतु कोऊ नहीं निश्चय पाइ सक्ता है इति अगाधता है पुनः अपार ऐसा है कि कोऊ पार नहीं पाइ सक्ता है काहेते शेष शारदा निगम जो वेद इत्यादि नेति कहि निज मुख गावै सदा अपने मुख ते गान तौ करते हैं परन्तु रामचरित की इति नहीं कहते हैं अंत कोऊ नहीं पावत ताते अपार है १ जो रामचरित मानस शंभु उमा पार्वती सों कही पुनः सोई याज्ञवल्क्य मुनि भरद्वाज सों कही पुनः जो गरुड़ काकभुशुंडि सों सुने सोई मानस गुनि मन में विचार करि तुलसीदास भी सोई रामचरितमानस वर्णन करी २ कैसा तुलसीदास वर्णन करे जाको कहत सुनतसंते अपना उर सदा रामपदरति होत अर्थात् सोई रामचरित मानस जो श्रवण कीर्त्तन करैगा ताके उर अंतर में सदा रामपद प्रीति उत्पन्न

होइगी हे श्रीरामचन्द्र अर्थात् रोहिणी बुध सहित पूर्ण षोड़श कला-युत चन्द्रमा यथा लोक में प्रकाश करि अन्धकार चौरादि भय दुःख को हरिलेता है पुनः अमृतमय शीतल किरणिन करिकै लोक की ताप हरि शीतलपुष्ट आह्लाद कराता है तथा जानकी लषण सहित सौशील्य १ वात्सल्य २ सौलभ्य ३ गांभीर्य ४ क्षमा ५ दया ६ करुणा ७ आर्द्रव ८ उदारता ६ आर्जव १० शरणपालता ११ सौहार्द १२ चातुर्यता १३ प्रीतिपालकता १४ कृतज्ञता १५ धर्मनीति १६ इति षोड़श कला पूर्णचंद्र हौ अमल सुयश भुवन में प्रकाशमान कीर्ति चांदनी फैलि रही है इति हे रामचन्द्र कृपारूप किरणिन करि मेरे शोक कलि कामादि कृत दुःख दैहिक दैविक भौतिकादि सम्पूर्ण तापन को हरहु सुखद शरण में राखहु ॥ ३ । ४६ ॥

छप्पय ।

मातु जन्मि पितु नामकरण पुरजन अनप्राशन ।
प्रजा केलि ऋषियज्ञ जनकजन तोरि शरासन ॥
मगबासिन बन बेष मुनिन खर बधि दण्डक बन ।
केवट शबरी गीध बालि शुभ गति दै जगजन ॥
महि साधु जनन सुर हेतु प्रभु सेतु बाँधि मारे दुवन ।
इमि बैजनाथ सुख देहु जिमि राज बैठि चौद्रह भुवन ॥१॥

दो० । उनइस शत सैंतालिसै, चौदशि सित इषु मास ।
छप्पयरामायण तिलक, पूरण गुरुपद आस ॥ २ ॥
डेह्वासहित सु मानपुर, नंबरदारी ग्राम ।
बारहबंकी जिले महँ, बैजनाथ मम नाम ॥ ३ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमासियवल्लभपदशरणागतवैजनाथ-विरचिता रामचरितछप्पयप्रदीपिका समाप्ता ।

श्रीरामचरितमानस का अपूर्व संस्करण

सावन-कुंज, अयोध्या तथा श्रीमानदासजी, श्रीचिथरू-सिंहजी, श्रीभगवद्दासजी, श्रीभक्तमालीजी आदि रामायणियों की प्राचीन प्रति से काशी के प्रसिद्ध रामायणी श्रीवंदनपाठकजी की शुद्ध की हुई प्रति का शुद्ध और अपूर्व संस्करण श्रीतुलसी-साहित्य-परिषद् के स्वनामधन्य अध्यक्ष, निखिल-शास्त्र-निष्णात, सकल-साधुगुण-व्रात पं० श्री १०८ स्वामी रामवल्लभाशरणजी महाराज, श्रीजानकीघाट-अयोध्यानिवासी के निर्देशानुसार छप-कर तैयार है।

इसके प्रथम जितने भी संस्करण जहाँ कहीं से भी प्रकाशित हुए हैं, उनसे यह संस्करण कई बातों में विशेषता रखता है। अब तक इसका जो संस्करण काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा निकाला गया है, वही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। किंतु यह संस्करण वेणीमाधवदासजी-रचित "मूल गोसाईं-चरित" आदि से परिष्कृत होने के कारण उससे भी कई बातों में विशेषता रखता है। इसमें लगभग १३ मनोहर सादे और तिरंगे चित्र भी हैं।

अतः रामायण-प्रेमियों से प्रार्थना है कि वे शीघ्र इस दुर्लभ ग्रंथरत्न को मँगा लें। इन सब विशेषताओं के होते हुए भी इसका मूल्य सर्वसाधारण के लिए केवल ४) मात्र रक्खा गया है। डाक-व्यय पृथक्।

मिलने का पता—

मैनेजर नवलकिशोर-प्रेस, बुकडिपो, लखनऊ.